चन्दामामा
अप्रैल १९७६
1 Re

Photo by: DEVIDAS KASBEKAR

READY FOR THE RITUAL

राम और श्याम
—स्मगलरों को रंगे हाथ पकड़ते हैं!

सैर करने निकले राम श्याम,
देख रास्ते में गड़बड़ हुए हैरान!

"चोर नहीं... है ये स्मगलरों का सरदार, राम
नाम है इसका जालगुलाम."

"इंस्पेक्टर तुम फौरन इधर आओ, स्मगलरों को पकड़कर जेल ले जाओ."

स्मगलर डरकर वहां से भागे,
पैर उनके फिसले, वो न जा पाये आगे.

"पैरों के नीचे उनके, मैंने पॉपिन्स पैकेट थे फेंके, इन्हें खोल के आओ हम सब खायें मज़े से."

PARLE
POPPINS

"आपने कहा था कि ये बड़ी आसानी से साफ किये जा सकते हैं!"
सोमानी-पिल्किंगटन्स् वॉल टाइल्स आसानी से साफ किये जा सकते हैं तथा सम्पूर्ण स्वास्थ्य-सम्मत होते हैं। तरह तरह के डिजाइनों, फीके न पड़ने वाले रंगों—जगमगाते सफेद समेत में मिलते हैं। शानदार ऐसे कि देख कर जी खुश हो जाय। हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा निर्मित सैनिटरीवेयर तथा सोमा प्लम्बिंग फिक्सचर्स लिमिटेड द्वारा बने सोमा मेटल फिटिंग्स का बड़ी खूबसूरती के साथ सोमानी पिल्किंगटन्स् वॉल टाइल्स से मेल बैठ जाता है।
खूबसूरत स्नानगृह का प्रतीक
सोमानी-पिलकिंगटन्स लिमिटेड
हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
सोमा प्लम्बिंग फिक्सचर्स लिमिटेड
२, रेड क्रास प्लेस, कलकत्ता-७०० ००१
सचित्र रंगीन पुस्तिका—'ए गाइड टू ब्यूटिफुल बाथरूम्स' के लिए लिखिये और अपने प्रयोजन के अनुसार अपना स्नानगृह सजा लीजिये।
naa, SPL-7524 HIN

चन्दामामा
संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी
इस महीने की बेताल कथा 'योग्य वधू' है। कुछ लोगों के मन में तीव्र आकांक्षाएँ होती हैं। कोई धन की कामना करता है तो कोई यश की इच्छा रखता है। कोई अधिकार की आकांक्षा रखता है तो कोई सौंदर्य की पिपासा। मगर सबकी ये तृष्णाएँ पूर्ण नहीं होतीं। उनकी पूर्ति के लिए अनुकूल स्थिति भी होनी चाहिए, साथ ही उन्हें पूरा करने के लिए आवश्यक शक्ति एवं सामर्थ्यों की भी जरूरत होती है। यही बेताल कथा का सार है।
वर्ष : २८ अप्रैल १९७६ अंक : ८
A CHANDAMAMA PUBLICATION
CHITRA

मित्र-संप्राप्ति

[३२]

दक्षिण देश में महिलारूप्य नामक नगर के समीप एक घना जंगल था जिसमें एक विशाल वट वृक्ष था। उसके फलों को हज़ारों पक्षी खाया करते थे। उसकी छाया में अनेक यात्री विश्राम कर सकते थे। उसकी जड़ें दूर तक जमीन में चली गई थीं। उस वृक्ष के पत्तों के बीच अनेक प्रकार के पक्षी अपने घोंसले बनाये हुए थे। उसके खोखलों में अनेक प्रकार के कीड़े पहुंच गये थे। उसके फूलों के मकरंद का असंख्य मधुमक्खियाँ पान करती थीं।

उस महा वृक्ष पर लघुपतनक नामक एक कौआ निवास करता था। एक दिन आहार की खोज में महिलारूप्य नगर की ओर जाते हुए उसने एक बहेलिये को देखा। बहेलिया देखने में काला तथा क्रूर था। उसके हाथ में एक जाल था। उसे देख कौए ने सोचा–"यह दुष्ट मेरे निवासवाले वृक्ष की ओर ही जा रहा है। वहाँ पर पक्षियों को यह जरूर जाल में फँसाएगा। बेचारे न मालूम उन पक्षिनों की क्या हालत होगी! चाहे कुछ भी हो, मुझे उनकी रक्षा करनी है।"

यों सोचकर कौआ अपने निवास के वृक्ष की ओर लौट गया और सभी पक्षियों को उसने सावधान किया–"एक बहेलिया जाल और चावल के दाने लेकर इसी ओर आ रहा है। तुम लोग उस दुष्ट तथा उसके चावल पर भी विश्वास मत करो। वह जाल फेंककर चावल फेंक देगा। तुम लोग उस चावल को जहर के समान मानकर मत छुओ।"

बहेलिये ने बरगद के निकट आकर जाल और चावल फेंक दिया। इसके बाद

अंतिम पृष्ठ का चित्र

वह थोड़ी दूर चला गया और एक स्थान पर छिपकर इंतज़ार करने लगा । कौए ने पहले ही सभी पक्षियों को सावधान कर दिया था, इसलिए सारे पक्षी गुप्त रूप से दूर जाकर छिप गये ।

लेकिन थोड़ी देर में चित्रग्रीव नामक कबूतरों का राजा अपने एक हज़ार अनुचरों के साथ आहार की खोज में उधर आ निकला । दूर से ही उन्हें चावल दिखाई दिये । सभी कबूतर चावल की दिशा में उड़ते हुए आये । कौए ने उन्हें खतरे से बचाने के लिए चिल्ला-चिल्ला कर चेतावनी दी, पर कोई फ़ायदा न रहा । खाने के लोभ में पड़कर सभी कबूतर चावल के दानों पर आ बैठे और जाल में फँस गये । अज्ञान में रहते जिह्वा के प्रलोभन में पड़नेवाले प्राणियों को मछलियों की भाँति आकस्मिक मृत्यु का शिकार होना पड़ता है । इसलिए कबूतरों को तो दोष नहीं दिया जा सकता है । मानव जाति में प्रलोभन सहज ही है । वरना रावण जैसा ईश्वर भक्त भी पराये पुरुष की पत्नी का अपहरण करना पाप है, यह बात क्यों समझ न पाया? ईश्वर रूपी राम सोने के हिरण को भ्रम या माया क्यों नहीं समझ पाये? धर्मात्मा युधिष्ठिर पांसे खेलकर अचानक अपने सर्वस्व को जुएँ में क्यों खो बैठे? इन सब घटनाओं का अर्थ यही होता है कि अपने मन को जो चीज़ आकृष्ट करती है, उसके पीछे छिपे खतरे को मनुष्य भाँप नहीं पाता है, अथवा खतरे का सामना करना विधि-विधान है तो मेधावी भी अपनी बुद्धि पर नियंत्रण खो बैठता है ।

बहेलिये को मालूम हुआ कि कबूतर उसके जाल में पूर्ण रूप से फँस गये हैं । वह परम आनंदित हुआ और जाल की ओर बढ़ा ।

चित्रग्रीव ने समझ लिया कि बहेलिए के जाल में उसके सारे अनुचर फँस गये हैं । इस पर उसने अपने अनुचरों से कहा—

"तुम लोग चिंता मत करो! जो व्यक्ति खतरे के वक़्त अपनी हिम्मत नहीं हारता, वह खतरे का सामना करके बच सकता है। बहेलिये के यहाँ पर आने के पहले ही हम लोग एक साथ उड़कर जाल के साथ उस दुष्ट की आँखों से बचकर चले जायेंगे। ऐसा करने पर ही हम लोग बच सकते हैं, वरना निराशा में डूबकर सब लोग एक एक दिशा में उड़ने की कोशिश करेंगे तो हम सब दो सिरवाले पक्षी के जैसे खतरे में फँस जायेंगे। इसलिए तुम सब मेरी बातों पर ध्यान दो।"

दो सिरवाले पक्षी की कहानी

[एक जमाने में दो सिरवाला एक पक्षी था। उसके सिर दो विपरीत दिशाओं में थे। एक दिन उस पक्षी के एक मुंह को अमृत प्राप्त हुआ। इस पर दूसरे मुंह ने भी अमृत में हिस्सा माँगा। मगर पहले मुंह ने इसे स्वीकार नहीं किया। तब दूसरे मुंह ने कहीं से ज़हर प्राप्त करके उसे खा डाला। फिर क्या था, ज़हर ने पक्षी तथा उसके दोनों सिरों को भी जान से मार डाला।]

कबूतरों के राजा चित्रग्रीव के मुंह से यह कहानी सुनकर सभी कबूतर एक साथ उड़कर भाग गये।

बहेलिया उन कबूतरों के साथ जमीन पर दौड़ते हुए सोचने लगा–'ये पक्षी शीघ्र ही आपस में लड़ पड़ेंगे, तब वे मेरे जाल के साथ नीचे आ गिरेंगे।'

लघुपतनक अपने आहार की खोज करना छोड़ जाल के पीछे वह भी उड़ता हुआ चला गया।

शीघ्र ही कबूतर जाल के साथ इतनी दूर उड़ गये कि बहेलिये की आँखों से ओझल हो गये। इस पर वह निराश हो सोचने लगा–'जो क़िस्मत में लिखा होगा, वही होगा! जो क़िस्मत में लिखा गया है, वह बिना प्रयत्न के ही अपने आप घट जाता है। मेरे परिवार के भरण-पोषण का आधार जो जाल था, वह भी खो गया।' यों सोचकर बहेलिया दुखी हो घर लौटा।

माया सरोवर

[३]

[जयशील ने अर्द्ध रात्रि के समय आर्तनाद सुना। उसने श्मशान में एक विचित्र आकृति का वध करके सिद्ध साधक की रक्षा की, इसके बाद निकट के एक घर में जाकर उस घर की मालिकिन बूढ़ी से बात कर ही रहा था, तभी हिरण्य नगर का रक्षक दो अनुचरों के साथ आकर दर्वाजा खोलने के लिए चिल्ला उठा। बाद—]

नगर रक्षकों का अधिकारी आधी रात के वक़्त आकर दर्वाजा खोलने को कहते देख बूढ़ी आश्चर्य में आ गयी, साथ ही उसे डर भी लगा।

वह दर्वाजे के निकट गई। कुंडी खोलने गई, पर थोड़ी देर के लिए वह रुक गई और जयशील की ओर मुखातिब हो उसने पूछा—"बेटा, तुमने कोई बड़ा अपराध तो नहीं किया है न? राजभटों से बचकर भागने की तो नहीं सोच रहे हो न? तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं, साफ़-साफ़ बतला दो।"

"नानीजी! मैंने कोई ऐसा अपराध तो नहीं किया है। जीविका की खोज में कई देशों का चक्कर काटनेवाला व्यक्ति हूं मैं! बस! मैं शपथ खाकर कहता हूं कि इसके अतिरिक्त मैंने कोई अपराध नहीं किया है।" जयशील ने कहा।

"तुम्हारी रूप-रेखाएँ और बोलने का ढंग देखने से लगता है कि तुम भली भाँति शिष्टाचार जाननेवाला व्यक्ति हो! निर्दोष व्यक्ति को राजभटों का डर कैसा?" यों कहते बूढ़ी ने चटकनी हटाकर दर्वाजे खोल दिये।

नगर का रक्षक घर के भीतर प्रवेश किये बिना ही बाहर ही खड़े-खड़े बूढ़ी से बोला-"नानी! मैं तुम्हारे पति को अच्छी तरह से जानता हूँ। आधी रात के वक़्त मैंने तुम्हारी निद्रा में खलल डाली, तुम बुरा मत मानो। श्मशान के पहरेदार का पुत्र और एक सिद्ध साधक के बीच झगड़ा हुआ, इस कारण से मुझे यहाँ पर आना पड़ा। तुम्हारे घर क्या कोई खड्गधारी युवक आया है?"

बूढ़ी सोच ही रही थी कि क्या जवाब दिया जाय, तभी जयशील बगल के कमरे से बाहर आया और बोला-"महाशय! आप जिस युवक की बात करते हैं, वह मैं ही तो नहीं?"

श्मशान के पहरेदार का पुत्र चिल्लाकर बोला-"सरकार! इसी ने मरकर ज़िंदा हुए मेरे पिता का सिर काट डाला है!"

सिद्ध साधक ने उसकी ओर क्रोध भरी दृष्टि दौड़ाकर कहा-"अरे कमबख्त! मैं तुम्हें कितनी बार समझा दूँ? मरा हुआ व्यक्ति कहीं फिर से ज़िंदा हो सकता है? इस युवक ने तुम्हारे पिता में प्रवेश किये हुए महा भूत का वध किया है! यह बात मैंने उसी भूत के मुँह से सुनी है। अब तुम अपनी बकवास बंद कर दो।"

"तुम दोनों चुप न रहोगे तो अभी तुम्हारे सिर काटकर श्मशान में गाड़ दूँगा।" यों नगर रक्षक ने सिद्ध साधक तथा श्मशान के पहरेदार के पुत्र को डांटा, फिर जयशील से पूछा-"भाई, यह बताओ, तुम्हारा नाम क्या है? तुम कहाँ से आ रहे हो?"

"महाशय! मेरा नाम जयशील है। मैं अमरावती का निवासी हूँ। हमारे

राजा का नाम रुद्रसेन है। आपने शायद उनका नाम सुना होगा। मैं कुछ अनिवार्य कारणों से अपने राज्य को छोड़ जीविका की खोज में यहाँ आया हुआ हूँ!" जयशील ने संक्षेप में अपना वृत्तांत सुनाया।

नगर के अधिकारी ने सिद्ध साधक तथा श्मशान के पहरेदार के पुत्र को दिखाते हुए जयशील से पूछा–"क्या तुम इन दोनों को जानते हो? पहरेदार का पुत्र बताता है कि तुमने श्मशान में इसके पिता का वध किया है। इसका तुम क्या जवाब देते हो?"

जयशील ने एक बार दोनों के चेहरों को परखकर देखा, सिद्ध साधक को पहचानकर कहा–"महाशय! मैंने इस साधक को श्मशान में देखा है! अपने को महा काल का काल बताते हुए एक विकृत आकृतिवाला इसका पीछा कर रहा था, मैंने उसे रोका। वह मुझ पर हमला करने को हुआ, तब अपनी आत्मरक्षा के हेतु मुझे उसका सर काटना पड़ा।"

"तुमने महा काल के काल का सिर नहीं, मेरे पिता का सिर काट डाला है। कल सुबह सभी लोगों ने बताया कि मेरे पिता मर गये हैं, इसलिए मैं उन्हें श्मशान में ले गया। उन्हें जलाने के लिए लकड़ी लाने में चला गया, तभी किसी

देवता की कृपा से वे जीवित हो उठे। उस समय लकड़ी को साथ ले लौटते हुए तुम्हारे द्वारा मेरे पिता का वध करते मैंने देख लिया है।" श्मशान के पहरेदार के पुत्र ने क्रोध में आकर कहा।

"अबे, मुझे यह नहीं मालूम था कि वह लाश किसकी है? मैंने अपने मंत्र के बल पर उस लाश में काल का आवाहन किया। तभी लाश में प्राण आ गये। मैं काल के प्रभाव से डरकर भाग रहा था, तब इस वीर युवक ने आकर काल का सिर काट करके मेरी रक्षा की है।" सिद्ध साधक ने असली बात स्पष्ट कर दी।

नगर का रक्षक मंदहास करके जयशील से बोला–"तुमने अपना नाम जयशील बताया है न? ये दोनों चार-पांच घंटों से अंट-संट बककर मेरे दिमाग को खाये जा रहे हैं। मुझे संदेह हो रहा है कि इसमें कोई गुप्त बात है।...महामंत्री इस पहेली को सुलझायेंगे। तुम लोग मेरे साथ चलो।" यों कहते दूर पर एक पेड़ से बंधे घोड़े की ओर वह चल पड़ा।

जयशील ने बूढ़ी से कहा–"नानी, तुमने सारी बातें सुन लीं। मैं निर्दोष हूं। महामंत्री या महाराजा यह बात आसानी से समझ लेंगे। मैं कोई नौकरी प्राप्त करके फिर तुम से मिलूंगा।"

"बेटा! तुम्हारा शुभ हो!" इन शब्दों के साथ बूढ़ी ने हाथ उठाकर जयशील को आशीर्वाद दिया।

आगे-आगे घोड़े पर नगर रक्षक तथा पीछे पैदल जयशील, सिद्ध साधक तथा पहरेदार के पुत्र ने नगर में प्रवेश किया। तब तक सूर्योदय हो चुका था। बिना राजभटों को साथ लिए घोड़े पर जानेवाले नगर रक्षक तथा उसके पीछे चलनेवालों में बाल बिखेरे, काले वस्त्र धारण किये साधक को देख लोग विस्मय में आ गये। कुछ लोग वास्तविक समाचार जानने के लिए श्मशान के पहरेदार के पुत्र के पास पहुँचे। वह चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा–"इस खड्गधारी युवक ने मृत होकर ज़िंदा हुए मेरे पिता को मार डाला है। काले वस्त्रवाला वह कमबख्त हत्यारे का समर्थन कर रहा है। राजा तो मेरे ही हाथों द्वारा इन दोनों के सिर कटवा देंगे।"

नगर रक्षक जब राजमहल तक पहुँचा, तभी महामंत्री राजमहल में प्रवेश करने जा रहा था। अधिकारी के साथ कुछ व्यक्तियों को देख मंत्री ने सारा समाचार भाँप लिया। अधिकारी ने भी मंत्री को सारा वृत्तांत सुनाया।

मंत्री ने थोड़ी देर तक सोचकर कहा–"श्मशान के पहरेदार की मृत्यु को वैद्य

तथा उसके रिश्तेदारों ने भी सही माना, ऐसे व्यक्ति का ज़िंदा रहना असंभव है! पर सिद्ध साधक के कथनानुसार उसके शरीर में किसी महाकाल का प्रवेश हुआ होगा! चाहे जो हो, उसमें प्राण आ गये और वह चलता भी जा रहा था न? ऐसे व्यक्ति का इस युवक ने वध कर डाला। इसके माने हत्या की है! लेकिन..." ये शब्द कहते रुक गया। आगे कुछ कहते न बना!

मौक़ा पाकर जयशील ने कहा—"महामंत्री, मैं और बातें तो नहीं जानता, मगर मैंने आत्मरक्षा के हेतु तलवार जरूर चलाई है। आत्मरक्षा के प्रयत्न में प्रत्यर्थी का वध करना अपराध नहीं माना जाता है न?"

"हाँ, हाँ! यह भी सही है!" मंत्री ने गहरा निश्वास लेते हुए कहा।

सिद्ध साधक ने आगे बढ़कर मंत्री को प्रणाम किया और कहा—"महामंत्री! मेरा एक निवेदन है! आज्ञा हो तो निवेदन कर सकता हूँ!"

मंत्री ने स्वीकार सूचक सिर हिलाया। साधक ने कहा—"जयशील नामक यह युवक महा सत्वों की श्रेणी का है। सिर कटे काल ने इस युवक के खड्ग को अपूर्व शक्तियाँ प्रधान की हैं। ये बातें मैंने स्वयं सुनी हैं। इस युवक के द्वारा महाराजा का हित होने की संभावनाएँ हैं!"

मंत्री ने खीझकर कहा—"क्या तुम्हारी बातों का यह मतलब है कि अपने पुत्र और पुत्री को खोकर चिंता में घुलनेवाले राजा इस युवक की तलवार की मदद से राज्य का विस्तार करने के लिए भेज दे?"

"महामंत्रीजी! मेरा सुझाव यह नहीं है। राजा अपने पुत्र तथा पुत्री को खोज लाने के लिए इस युवक को भेज सकते हैं। इस कार्य में जयशील अवश्य सफल होगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस युवक को महाकाल के आशीर्वाद तथा सहायता प्राप्त होंगी!" सिद्ध साधक ने कहा।

ये बातें सुनने पर मंत्री को लगा कि एक जटिल समस्या तत्काल ही हल हो गई हो! उसने सोचा कि वृद्ध होकर मृत्यु के निकट आने पर मरे हुए श्मशान के पहरेदार की मृत्यु के बारे में सोचते-विचारते समय बरबाद करना व्यर्थ है। साधक के कथनानुसार जयशील को राजा के पुत्र तथा पुत्री की खोज में भेजना उचित ही होगा।...

यों सोचकर मंत्री ने उन्हें वहीं पर ठहर जाने को कहा और वह राजा के दर्शन करने गया। उस वक़्त सेनापति का पुत्र मंगलवर्मा राजा से वर्तालाप कर रहा था। मंत्री को देखते ही राजा ने सादर हाथ हिलाकर कहा–"महामंत्री! मंगलवर्मा युवराज तथा युवरानी की खोज करने की अनुमति माँग रहा है। तुम्हारी क्या सलाह है?"

मंत्री ने पल भर सोचकर कहा–"महाराज, इस कार्य के लिए अत्यंत साहस के साथ अपूर्व शक्तियाँ भी रखनेवाला जयशील नामक एक युवक हमें मिल गया है। कहा जाता है कि उसकी तलवार को अपूर्व शक्तियाँ प्राप्त हैं।"

राजा कनकाक्ष किन्हीं विचारों में डूब गया। मंगलवर्मा को महामंत्री पर बड़ा क्रोध आया। फिर भी उसने अपने क्रोध को प्रकट किये बिना ही पूछा–"मंत्री महोदय! क्या वह युवक कुलीन है? आप जानते हैं कि महाराजा ने युवराज तथा युवरानी को खोजकर लानेवाले को आधा राज्य सौंपने की घोषणा की है? क्या वह इसके योग्य होगा?"

इस बेतुकी सवाल पर मंत्री खीझकर बोला–"हम नहीं जानते कि युवराज तथा युवरानी का अपहरण करनेवाले लोग मानव हैं, दानव हैं, या देवता हैं! ऐसी हालत में उन्हें खोजकर लानेवाला कैसा शक्तिशाली होगा? ऐसा व्यक्ति आधा राज्य पाने के योग्य क्यों न होगा?"

"क्या यह बात विश्वसनीय है कि उसकी तलवार अमोघ शक्तियाँ रखती है? एक बार मेरे हाथ वह तलवार दिला दीजिए! में उसकी परीक्षा लेना चाहता हूँ।" मंगलवर्मा ने कहा।

"मैं समझता हूँ कि वह युवक इस कार्य में कोई आपत्ति न उठायेगा!" मंत्री ने जवाब दिया। राजा कनकाक्ष अत्यंत विवेकशील तथा प्रखरबुद्धिवाले हैं। उन्होने कुछ ही क्षणों में सारी बातें समझ लीं और मंत्री से कहा– "महामंत्री! किसी अज्ञात व्यक्ति को युवराज तथा युवरानी की खोज करने के लिए क्यों भेजा जाय? उस युवक की तलवार की जांच करने के लिए मंगलवर्मा को दिलवा दो। यदि वह तलवार अपूर्व शक्तियाँ रखनेवाली हो तो उस युवक को बहुत बड़ा पुरस्कार देकर हमारे दरबार में अच्छी नौकरी देंगे।"

"महाराज! तब उसकी कैसी परीक्षा ले? इसका निर्णय भी तो होना चाहिए।" महामंत्री ने पूछा।

"हमारे मृगशाला के अधिकारी से कहकर कठघरे में स्थित दो बाघों को मंगवा दो। मंगलवर्मा अमोघ शक्तियाँ रखनेवाली तलवार लेकर उन बाघों का सामना करेगा।" राजा ने कहा।

मंत्री के कहने पर जयशील ने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक अपनी तलवार मंगलवर्मा के हाथ दे दी। कुछ ही क्षणों में बाघोंवाले कठघरे मंगवाये गये। चारों तरफ़ दस फुट ऊँचीवाली चहार दीवारी के भीतर वे कटघरे रखवाये गये। मंगलवर्मा हाथ में तलवार लेकर भीतर पहुँचा, तब उसके द्वार बंद किये गये। राजा, मंत्री, जयशील इत्यादि चहार दीवारी के निकट के महल पर खड़े हो भीतर देखने लगे।

मृगशाला के अधिकारी ने मंगलवर्मा को सचेत कर ऊपर से कठघरे के द्वार उठाये और वह भी चहार दीवारी के ऊपर चला गया। दोनों बाघ भयंकर, रूप से गर्जन कर मंगलवर्मा की ओर बढ़ने लगे। (और है)
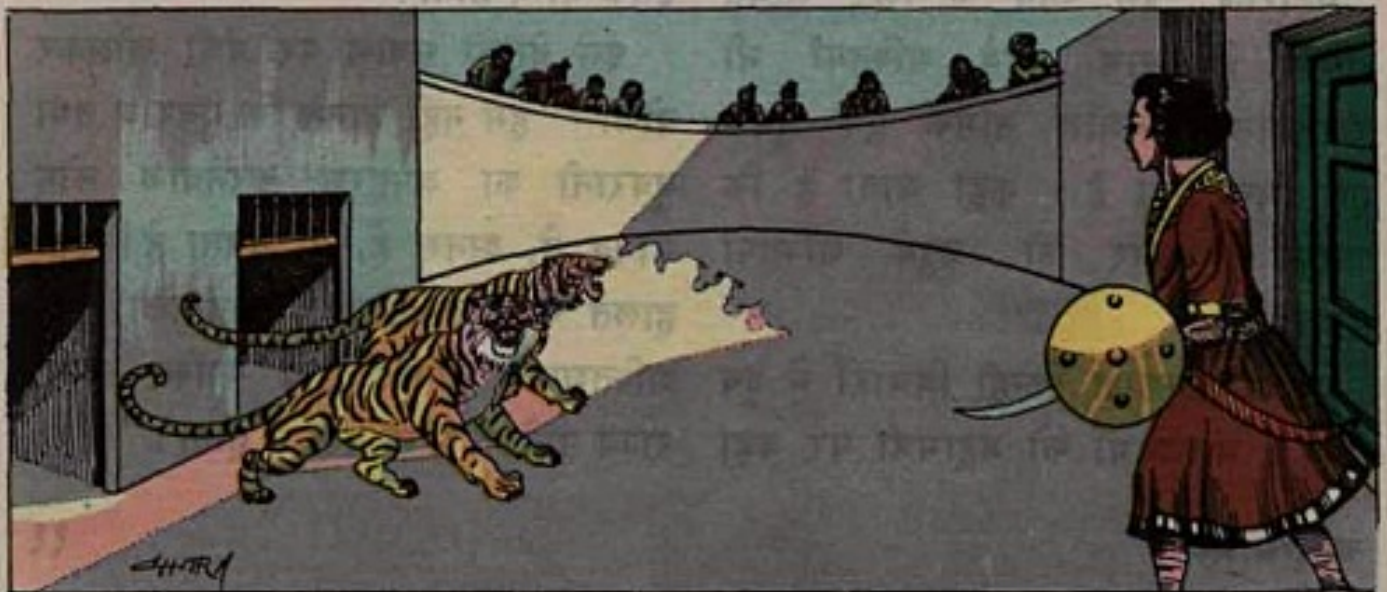
योग्य बंधु

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया।

पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन! मैं यह नहीं जानता कि तुम्हारे इस श्रम का लक्ष्य क्या है? मगर यह समझना भूल होगी कि लक्ष्य तक पहुँचने पर आशय की सिद्धि होती है। इसके उदाहरण स्वरूप में तुम्हें चन्द्रवर्मा की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: चन्द्रवर्मा एक क्षत्रिय युवक है। वह सबसे अधिक सौंदर्य की आराधना किया करता था। रमणीय प्राकृतिक दृश्य, मनोहर वस्तुएँ तथा सुंदर मनुष्यों को भी देखने पर उसके मन में जो संतोष होता था, वह अन्य वस्तुओं के द्वारा नहीं।

बेताल कथाएँ

चन्द्रवर्मा विवाह के योग्य हो चुका था, इसलिए उसके माता-पिता ने उसके विवाह का प्रयत्न करना प्रारंभ किया, लेकिन चन्द्रवर्मा ने उनसे स्पष्ट कह दिया—"मेरे विवाह के संबंध में आप लोग कृपया कोई प्रयत्न न करें। मैं अपनी पसंद की कन्या का स्वयं चुनाव करूंगा।"

एक दिन संध्या को चन्द्रवर्मा जंगल में चला गया और वहाँ की प्राकृतिक रमणीयता को देख प्रसन्न हो थोड़ी देर टहलता रहा। वहाँ एक स्थान पर उसे एक सुंदर तड़ाग, उसमें मनोहर कुमुद तथा उस तड़ाग के तट पर घास चरते मलाई रंगवाला चमकीला एक घोड़ा भी दिखाई दिये।

तत्काल चन्द्रवर्मा घोड़े के समीप पहुँचा, उछलकर उस पर बैठ गया। दूसरे ही क्षण घोड़ा तेजी के साथ जंगल में भाग खड़ा हुआ। चन्द्रवर्मा घोड़े को रोक न पाया और वह उस पर औंधे मुँह लेटकर आँखें बंद किये रहा। घोड़ा बड़ी देर तक दौड़ता रहा और आखिर उसे नीचे गिराकर कहीं चला गया। चन्द्रवर्मा बेहोश हो गया।

होश में आने पर उसने देखा, सवेरा होने को है। आसपास का प्रदेश उसे नया सा लगा। निकट ही एक झरना बह रहा था। थोड़ी दूर से एक मधुर गीत सुनाई देने लगा। गीत गानेवाली कोई नारी थी।

गीत के माधुर्य तथा कंठ-स्वर पर मुग्ध हो चन्द्रवर्मा उसी दिशा में बढ़ा। वहां के दृश्य को देख स्तम्भित हो वह खड़ा ही रह गया। एक सुंदर उद्यान, उसके बीच एक पर्णकुटी, उद्यान में पुष्पों का चयन करते, गाते, सफ़ेद वस्त्रधारिणी एक सुंदर युवती केश बिखेरे दिखाई दी।

गीत के समाप्त होते ही चन्द्रवर्मा ने तालियां बजाकर कहा–"वाह, अद्भुत है! अपूर्व है!"

वह रमणी चौंक पड़ी। चन्द्रवर्मा की ओर देख पूछा–"अद्भुत क्या है? अपूर्व क्या है?"

"तुम्हारा गीत! तुम्हारा सौंदर्य!" प्रसन्नतापूर्वक चन्द्रवर्मा ने उत्तर दिया।

युवती मुस्कुरा पड़ी और बोली–"मेरे सौंदर्य की ही ऐसी प्रशंसा कर रहे हो? सामने दिखाई देनेवाली पहाड़ी तलहटी में, इसी झरने के किनारे रहनेवाली सुंदरी को देखोगे तो न मालूम तुम क्या क्या कह बैठोगे? ठहर जाओ, मैं अभी तुम्हें कुछ खाने को ला देती हूं।" यों कहते वह रमणी पर्णकुटी के भीतर चली गई।

चन्द्रवर्मा उस रमणी के आतिथ्य की प्रतीक्षा में ठहर न पाया। पहाड़ी तलहटी में रहनेवाली सुंदरी को देखने को उसका मन ललचा उठा। इसलिए वह झरने के किनारे चलते पहाड़ी तलहटी की ओर बढ़ा।

चन्द्रवर्मा के तलहटी तक पहुंचते-पहुंचते संध्या हो चली। वहां पर झरने के किनारे

एक और बड़ा उद्यान था। उद्यान के बीच एक सुंदर महल था। उस महल में अप्सरा जैसी कोई युवती दीपक जला रही थी।

चन्द्रवर्मा ने युवती के निकट जाकर पूछा—"हे सुंदरी, इस महल में तुम्हारे रहते दीपकों की क्या आवश्यकता है? सच मानो, तुम जैसी सुंदरी को मैंने आज तक नहीं देखा है!"

युवती ने चन्द्रवर्मा के सारे अतिथि-सत्कार किये, खाना खिलाया और सोने के लिए एक दूसरे कमरे में सुंदर गद्दा बिछाया। बार-बार उनकी प्रशंसा होते देख वह युवती बोली—"हे वीरवर! यदि तुमने पहाड़ पर रहनेवाली सुंदरी को देखा होता तो मेरे सौंदर्य की ऐसी प्रशंसा नहीं करते? रात हो चली है! जाकर सो जाओ।" यों कहकर वह अपने कमरे के अन्दर चली गई।

ये शब्द सुनने पर चन्द्रवर्मा की नींद जाती रही। पहाड़ पर की सुंदरी को देखने तक उसके प्राण ठिकाने न लगे। उसने धीरे से कमरे के किवाड़ खोल दिये और उस अंधेरे में ही घनी दूब तथा कंटीली झाड़ियों से भरे उस पहाड़ पर चढ़ने लगा।

चन्द्रवर्मा जब पहाड़ पर पहुँचा, तब सूर्योदय हो रहा था। वहाँ का प्रदेश अत्यंत विशाल था। उसकी कल्पना के अनुरूप वहाँ पर एक विशाल उद्यान था। उद्यान के बीच एक बड़ा महल था। उसने जो झरना देखा था, उसके उद्गमवाला सरोवर उसी उद्यान में था। उस सरोवर में एक अपूर्व सुंदरी स्नान करते उसे दिखाई दी।

चन्द्रवर्मा युवती के निकट जाकर बोला—"तुम मेरी स्वप्न सुंदरी हो! तुम जैसी सुंदर युवती इन तीनों लोकों में नहीं है। मैं तुम्हारे साथ ही विवाह करूँगा।"

"जाओ यहाँ से! अधिक देर तुम यहाँ ठहर जाओगे तो तुम्हारी प्रतिष्ठा के साथ

प्राण भी जाते रहेंगे।" यों कहकर वह युवती स्नान समाप्त कर महल के भीतर चली गई।

चन्द्रवर्मा हताश हो पहाड़ से उतर पड़ा और इसके पूर्व उसने जिन युवतियों को देखा था, उनकी खोज की, पर वे भी उसे दिखाई नहीं दीं। इसके बाद वह बड़ी कठिनाई से अपने गाँव पहुँचा और अपने माता-पिता के द्वारा निर्धारित कन्या के साथ विवाह किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन, चन्द्रवर्मा ने तीन अपूर्व सुंदरियों को देखा था, तब उसकी सौंदर्य-पिपासा बढ़ने के बजाय क्यों क्षीण हो गई? पहली दो रमणियों ने उसके साथ जो आदर भाव दिखाया, वह तीसरी सुंदरी ने क्यों नहीं दिखाया? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"चन्द्रवर्मा में सौंदर्य-पिपासा की कमी नहीं है। उसकी असली कमी यह है कि उसने अपनी इस सौंदर्य-पिपासा को अपने विवाह के साथ जोड़ दिया। भले ही वह उस अनुपम सौंदर्यवती के साथ विवाह करने को तैयार हो, पर शायद वह सौंदर्यवती उसके साथ विवाह करने को तैशार न होगी। तीसरी सुंदरी की बाबत यही बात हुई है। चन्द्रवर्मा ने जब उस युवती के सौंदर्य की प्रशंसा की, तब वह सुंदरी नाराज़ नहीं हुई। परंतु जब उसने कहा कि वह उस युवती के साथ विवाह करना चाहता है, तभी वह नाराज़ हो गई। पहली दो सुंदरियों के साथ यह बात नहीं हुई। परंतु चन्द्रवर्मा ने जब यह बात भली भाँति समझ ली कि उसकी सौंदर्य-पिपासा उसे पत्नी ला न देगी, तब उसने अपने माता-पिता के द्वारा निर्धारित कन्या के साथ विवाह किया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

धर्म बुद्धि

एक गाँव में श्रीधर नामक एक संपन्न परिवार का व्यक्ति था। वह बड़ा दानी था। उसके यहाँ किशनचन्द नामक एक नौकर था। एक दिन श्रीधर के साथ किशन भी हाट में चला गया। वहाँ पर क़ीमती और सुंदर रथ दिखाई पड़ा। चन्दन से निर्मित उस रथ में दो घोड़े जुते थे। उसमें बढ़िया नक्काशी की गई थी। किशन रथ की ओर अविचल देख रहा था, इसे देख श्रीधर ने उसे ख़रीद कर किशन को भेंट किया।

एक दिन श्रीधर के घर एक अतिथि आया। उसने किशन के कमरे में चन्दन के रथ को देख मुग्ध होकर कहा—"वाह! यह रथ कैसा सुंदर है? यह कहाँ पर मिलता है?"

तुरंत श्रीधर ने कहा—"आप इसे ले लीजिए।" यों कहकर किशन के हाथों से उसे अतिथि को दिलाया। इस पर किशन का मुँह पीला पड़ गया। इसे देख श्रीधर से रहा न गया, वह बोला—"मैं भी एक ज़माने में मेहनत करके अपना पेट पाल चुका हूँ। मैं तुम्हें अपना छोटा भाई बता कर सबके साथ तुम्हारा परिचय करा रहा हूँ। इसलिए मैंने सोचा था कि तुम भी मेरे जैसे दान देने की प्रवृत्ति रखते हो।"

यह बात सुनने पर किशन का मन शांत हुआ। इसके थोड़े दिन बाद अतिथि अपनी पुत्री को साथ ले आ पहुँचा और श्रीधर से बोला—"मैं अपनी पुत्री का विवाह आपके छोटे भाई के साथ करने का निश्चय कर चुका हूँ।" फिर क्या था, किशन को चन्दन के खिलौने के साथ चन्दन की गुड़िया जैसी पत्नी भी प्राप्त हुई।

हीराट का अमीर

बात बहुत पुरानी है। हीराट में एक अमीर था। उसके दो पत्नियाँ थीं। दोनों सुंदर तथा विवेकशीलाएं थीं। इसलिए अमीर दोनों से बराबर प्यार करता था। मगर वह स्वभाव से हठी था। दूसरों की बात बिलकुल मानता न था।

उसके परिवार में बहुत समय से मांस और मछली खाने की आदत न थी। वे लोग सिर्फ़ अण्डे खाते थे। अतिथियों का सत्कार करना, सोने व रत्नों का दान करना, भिखारियों को कुछ न कुछ दान देना—ये ही उसके प्रधान गुण थे। शिकार खेलने का उसे बड़ा शौक था। दोस्तों के साथ शिकार खेलने जाता तो वह सब से ज्यादा बड़े जानवारों को मार गिरा देता था।

उन्हीं दिनों में कंदहार का सुलतान मर गया तो उसका पुत्र गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठने के बाद ही कंदहार के राजकुमार शिकार खेलने जा सकते थे। गद्दी पर बैठते ही कंदहार के राजकुमार ने भारी पैमाने पर शिकार खेलने तथा अपने साथ हीराट के अमीर को साथ ले जाने का निश्चय किया। अमीर ने सोचा कि वह शिकार खेलने में कुशल है और वह अपनी कुशलता का राजकुमार को परिचय देगा।

शिकार खेलने की बड़ी तैयारियाँ की गईं। जंगल में खेमे गाड़ दिये गये। शिकार खेलने के एक दिन पहले ही अमीर भी आ पहुँचा। कंदहार के सुलतान ने आगे बढ़कर अमीर का स्वागत किया। अमीर ने सुलतान को शिकार खेलने संबंधी अनेक रहस्य बता दिये।

दूसरे दिन सवेरे तुरही की आवाज के साथ शिकार खेलना शुरू हुआ।

ए. सी. सरकार, जादूगर

अमीर अपने तीर व कमान लेकर खेमे से बाहर निकला। उसी वक़्त पेड़ पर से उड़कर एक जंगली मुर्गी उसके पैरों के निकट आ बैठी और एक अण्डा देकर उड़ गई। अमीर का पैर उस अण्डे पर पड़ा जिससे सोने की नक्काशी की गई उसके जूते खराब हो गये।

"तोबा! तोबा! मेरे जूते खराब हो गये हैं।" अमीर के मुंह से निकल पड़ा। उसके नौकर ने झट से अमीर के जूते बदल डाले।

उस दिन शिकार खेलने में अमीर असफल रहा। वह अपने तीर से एक भी पक्षी को गिरा न पाया। उधर सुलतान ने एक चीते तथा एक हिरण को मार गिराया। अमीर की पराजय सीमा को पार गई। शिविर में लौटते वक़्त अपमान की वजह से उसका सिर झुका ही रह गया।

इसी अपमान के बोझ को लेकर अमीर हीराट को लौट आया। बड़ी देर तक सोचने पर भी उसे पता न चला कि आज ऐसा क्यों हुआ है? उसे लगा कि यह तो उस अण्डे का ही असर है। उसे अण्डों पर बड़ा क्रोध आया। फिर क्या था, अपने घर के सभी अण्डों को फोड़ डाला और अपने घर की मुर्गियों तथा मुर्गों को हटा दिया। उस दिन से हीराट में अण्डों पर पाबंदी लगाई गई।

दिन और महीने बीतते गये। अमीर की छोटी पत्नी ने एक पुत्र का जन्म दिया। इसके बाद उसकी तबीयत बिगड़ती गई। उसमें कमज़ोरी आ गई और साथ ही खून की कमी पड़ गई। हकीम की दवाइयों से भी उसकी तबीयत सुधरी नहीं। इस पर हकीम ने सुझाव दिया कि अण्डों के साथ एक औषध को मिलाकर खिलाने से उसकी तबीयत अच्छी हो सकती है।

यह बात सुनते ही अमीर बिगड़कर बोला—"हीराट नगर में कोई भी अण्डों

की बात उठा नहीं सकता । भले ही मेरी औरत ज़िंदा न रह जाय, पर मैं उन कमबख़्त अण्डों को अपने नगर में आने न दूंगा ।"

उधर अमीर की छोटी बीबी की हालत दिन व दिन बिगड़ती ही चली गई। हकीम तथा अमीर के परिवार के लोग भी चाहते हुए भी कुछ न कर पाये ।

यह खबर हीराट नगर के जादूगर हलीम को लग गई। वह और कोई न था। अमीर की छोटी बीबी का भाई था। उसने इस समस्या को हल करना चाहा। हीराट के छोटे से झण्डे को लेकर वह अमीर के पास आया और बोला-"अमीर साहब! आप अण्डों से तो घृणा करते हैं, पर हीराट के झण्डे से तो घृणा नहीं करते हैं न?"

"तोबा! तोबा! यह तुम क्या कहते हो? हमारे राज्य के चिह्न से क्या कोई घृणा करता है?" अमीर ने झट से जवाब दिया।

"तब तो देखिए! मैं इस झंडे से एक जादू करता हूं!" यों कहते हलीम ने कोई मंत्र पढ़ते झण्डे को अपने हाथ में लपेट लिया ।

"लैला...इस्मत आरा...हो...हा!" सब लोग अचरज में आकर देखते ही रहे कि

झण्डा अण्डे के रूप में बदल गया। "अमीर साहब! आप तो इससे घृणा नही कर सकते?" यों कहते हलीम ने अण्डे को जेब में रख लिया ।

"सरकार! इस अण्डे को...और अण्डे के रूप में स्थित झण्डे को लेकर क्या मैं आप की बीबी का इलाज कर सकता हूं?" हकीम ने पूछा ।

अमीर ने स्वीकार सूचक सिर हिलाया। हलीम ने अपनी जेब में से अण्डा निकालकर हकीम के हाथ में दे दिया और कहा-"मेरे पास कई झण्डे हैं! आप को जब भी अण्डा चाहें, मुझसे पूछ लीजिए?"

इसके बाद अण्डे से तैयार की गई दवा अच्छी तरह से कारगार सिद्ध हुई। छोटी बीबी की तबीयत तेज़ी के साथ सुधरने लगी। एक पखवारे के अन्दर वह पहले जैसी स्वस्थ हो गई। अमीर ने हकीम को कई अशर्फ़ियाँ इनाम में दे दीं।

हकीम ने उन अशर्फ़ियों को ले जाकर हलीम को दिखाया और कहा–"महाशय! यह इनाम तो पूर्ण रूप से आप ही को प्राप्त होना चाहिए था। आप ने जो अण्डे दिये, उन्हीं के द्वारा बीबी की तबीयत सुधर गई है।"

"मैं सभी अशर्फ़ियाँ न लूंगा। आप ज़ोर देंगे तो मैं आधी अशर्फ़ियाँ ले लेता हूँ।" हलीम ने कहा।

हकीम ने अशर्फ़ियों की गिनती करते हुए पूछा–"हलीम! यह बताइये कि झण्डा कैसे अण्डा बन गया? मुझे बताइए। मैं यह रहस्य किसी से नहीं बताऊँगा। अल्लाह की क़सम खाता हूँ।"

"दोस्त! यह तो बड़ी ही सरल बात है! मैं कंदहार से थोड़े अण्डे ले आया। एक अण्डे में छेद करके भीतरी हिस्से को साफ़ किया। इसके बाद उसे सुखाकर एक छोटे से रेशमी झण्डे के छोर पर गोंद पोत दी और उसे खाली अण्डे के भीतर छिपकाया। मैं जब जादू का प्रदर्शन कर रहा था, तब अण्डा मेरे बायें हाथ में था, पर उसे दूसरे लोग देख न पाते थे। जब मैं झण्डे को अपने हाथों में लेने लगा, तब उसे मैंने अपने बायें हाथ की अनामिका तथा अंगूठे से उसे भीतर ढकेल दिया। मैंने जब अण्डा दिखाया, तब झण्डा उसके भीतर था। दूसरी बार मैंने जो अण्डा निकाल कर दिया, वह सच्चा अण्डा था। वह पहले से ही मेरे पास था। इसके बाद मैंने जो-जो अण्डे दिये, वे सब कंदहार से लाये गये अण्डे थे।" हालीम ने समझाया।

हकीम हलीम का हाथ पकड़कर झकझोरते हुए बोला–"आप का जादू अद्भुत है!"

बुद्धिमती बहू

एक गाँव में वृद्ध दंपति था। उनके तीन पुत्र थे। तीनों के विवाह हो चुके थे। तीनों बहुएँ ससुराल में आ गई थीं। संयुक्त परिवार था। मगर थोड़े ही दिनों में बहुओं के बीच कलह शुरू हुआ और बढ़ता ही गया। इसे देख वृद्ध दंपति ने अपने तीनों पुत्रों के बीच जमीन-जायदाद और घर भी बांट कर दिया। उसी घर के अहाते में एक झोंपड़ी बनाकर वृद्ध दंपति रहने लगा। बारी-बारी से बहुएँ जो कुछ खाना भेजतीं-खाकर वृद्ध दंपति निश्चिन्त अपने दिन काटने लगा।

बंटवारे के बाद बहुओं के बीच कलह कम हो गया। मगर एक का दूससे पर निगरानी रखना और परस्पर स्पर्धा करना भी बढ़ता ही गया। तीनों परिवारों में जो कुछ होता वह बात की बात में सब पर प्रकट हो जाती थी। कोई भी बात गुप्त रह नहीं पाती थी। किसी बहू का पति कोई गहना बनाकर देता तो बाक़ी दोनों बहुएँ अपने पतियों को तंग कर वे ही चीज़ें बनवा लेती थीं। कोई पर्व या त्योहार आ पड़ता तो तीनों होड़ लगाकर मिष्टान्न बना लेतीं, दूसरे घरों में भी गर्व के साथ पहुँचा देतीं।

समय बीतता गया। एक बार बड़ी और छोटी बहू के बीच किसी बात को लेकर कोई झगड़ा हुआ और उनके बीच बोली बंद हो गई। उस दिन से वे दोनों बहुएँ मझली बहू के पास जाकर एक दूसरे पर शिकायतें करने लगीं।

बूढ़ी सास के कंठ में पंद्रह गिन्नियों की एक पुरानी सोने की माला पड़ी थी। वह लगातार तीन पीढ़ियों से उस घर की बहुओं को प्राप्त होती आ रही थी। एक दिन वृद्ध ने अपनी पत्नी से कहा–"हमने

उमा अग्रवाल

अपनी सारी जमीन-जायदाद अपने बेटों में बांटकर दे दी है, अब तुम्हें सोने की वह माला भी किसलिए? बहुओं में से किसी को क्यों न दे देती? इसे तुम अपने पास रखकर क्या करोगी?"

"मैं भी यही सोचती हूं, मगर यह निर्णय नहीं कर पा रही हूं कि किसको दूं? यह तो ऐसी चीज नहीं कि तोड़कर तीनों बहुओं में बांटी जा सके। इसलिए मैं यही सोचती हूं कि इन तीनों बहुओं में ऐसी कौन है जो एक और पीढ़ी तक इसे सुरक्षित रख सकती है?" बूढ़ी ने जवाब दिया।

ये बातें किसी तरह बड़ी बहू के कानों में पड़ गईं। उस रात को उसने अपने पति से ये बातें कह दीं। मझली बहू ने ये बातें सुन लीं और अपने पति के कान में डाल दीं।

"फिर क्या? तुम अपनी बुद्धि का उपयोग करके वह माला क्यों न प्राप्त करती?" पति ने हंसते हुए कहा।

वास्तव में मझली बहू बाक़ी दोनों बहुओं की अपेक्षा ज्यादा बुद्धिमती थी। वह इस सोच में डूब गई कि वह कैसे अपनी सास को प्रसन्न करे।

मझली बहू और उसके पति ने जो बातचीत की, उसे छोटी बहू ने सुन ली। उस दिन तक तीनों बहुएँ यही सोच रही थीं कि सास की माला तीनों बहुओं को समान रूप से प्राप्त होगी। अब प्रत्येक

बहू स्वयं पूरी माला को पाने के प्रयत्न में निमग्न हो गई। अब वे अपनी सास के प्रति पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा श्रद्धा और भक्ति दर्शाने लगीं।

उन्हीं दिनों में दीपावली का पर्व आ पड़ा। उस संदर्भ में बहुओं ने एक से बढ़कर एक ने सास को संतुष्ट करना चाहा। बड़ी बहू ने मिठाइयाँ बनाने के लिए जिन चीज़ों की जरूरत थी, उनकी फ़ेहरिश्त अपने पति के सामने रखी। ये सारी बातें दूसरी बहू ने सुन लीं।

इतने में मझले पुत्र ने अपनी पत्नी के निकट पहुँचकर पूछा–"पर्व के दिन तुम कौन-कौन सी मिठाइयाँ बनाने जा रही हो? यह भी तुमने सोचा?"

"मैं कोई मिठाई बनाने नहीं जा रही हूँ। आप ससुर के वास्ते एक जोड़ी धोतियाँ और सास के लिए एक साड़ी तथा एक चोली खरीद लाइये, मगर ख्याल रखिये कि ये चीजें दूसरों की आँखों में न पड़ें।"

मझली बहू ने अपने मन में सोचा, किसी भी हालत में बाक़ी दोनों बहुएँ अपने घर की बनी मिठाइयाँ उसे देंगी ही। ऐसी हालत में ख़ुद मिठाइयों का बनाना बेकार है। उसकी कल्पना के अनुसार बड़ी बहू ने एक थाली में मिठाइयाँ सजाकर मझली बहू के हाथ थमा दी। इसी प्रकार छोटी बहू के घर की मिठाइयाँ भी उसे प्राप्त हो गईं। बड़ी और छोटी
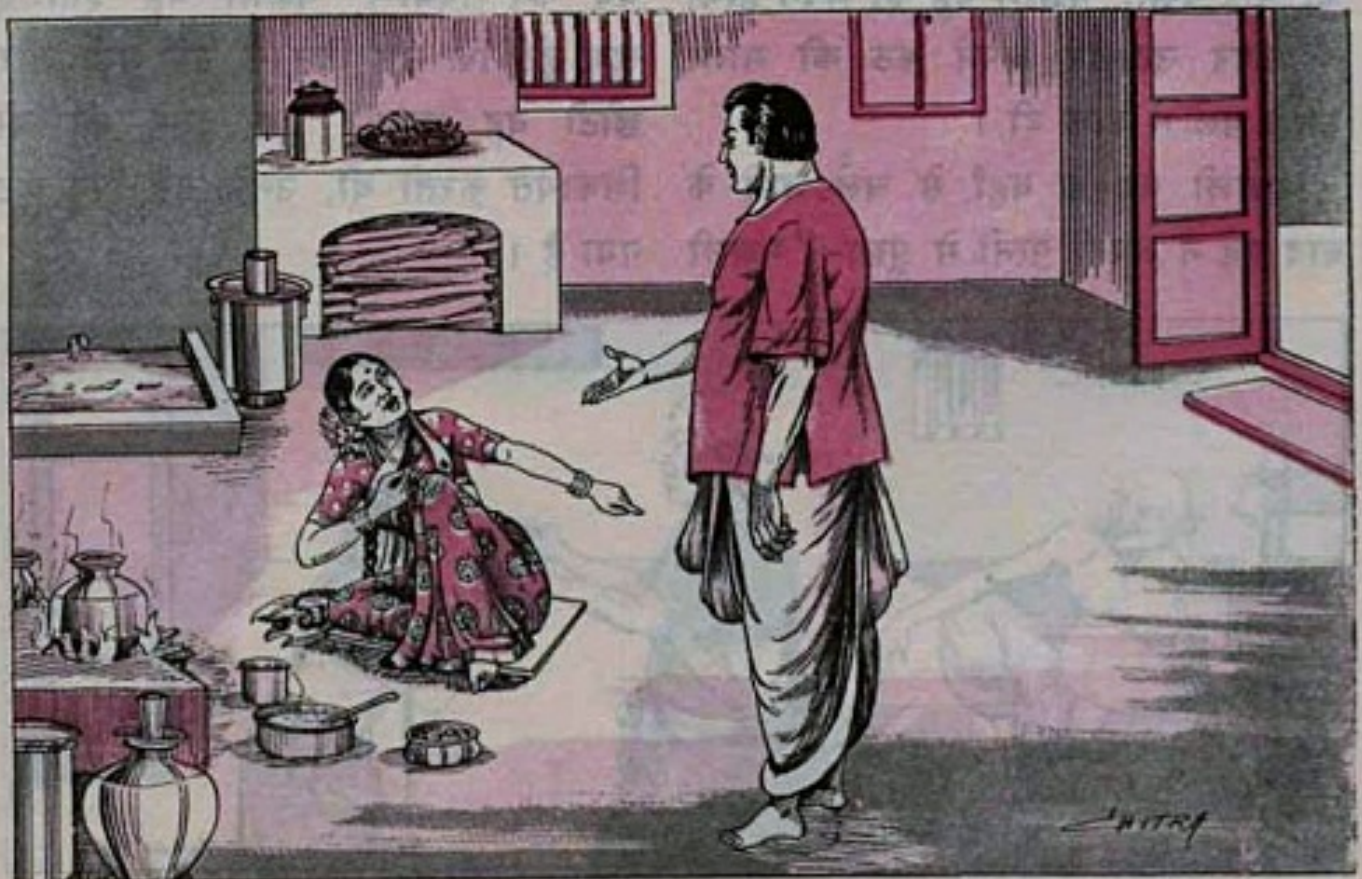
बहू के बीच बोली तो बंद थी ही, साथ ही उनके बीच किसी चीज का लेन-देन का भी न था। इसलिए मझली बहू ने बड़ी बहू की दी हुई मिठाइयों में से थोड़ी सी बड़ी बहू को देकर उनके मन में ऐसा विचार पैदा किया कि वे मिठाइयाँ उसकी खुद की बनाई हुई हैं। बची हुई मिठाइयों में से थोड़ी सी अपने पति को खिलाईं और बाक़ी मिठाइयाँ एक थाल में रखकर नये कपड़ों के साथ तैयार बैठी थी कि समय पर सास और ससुर को दे आये।

बड़ी और छोटी बहू झोंपड़ी में जाकर जब सास और ससुर को मिठाइयाँ दे आईं, तब उसने जाकर मिठाइयों की थाली सास और ससुर के सामने रख दी और उनके चरणों में प्रणाम किया। सास ने थाली की ओर देखा, मझली बहू को अपने हाथों से ऊपर उठाकर अपने कंठ की माला उसके गले में डाल दी।

मझली बहू के वहाँ से चले जाने के बाद बूढ़े ने अपनी पत्नी से पूछा—"मझली ने हमें नये कपड़े दिये, इसलिए खुश होकर क्या तुमने उसे माला पहना दी? या इसका और कोई कारण भी है?"

"नहीं, उसकी बुद्धिमत्ता और क़िफ़ायती पर खुश होकर मैंने दी है। इसके पास एक पीढ़ी तक ज़रूर यह माला सुरक्षित रहेगी।" इन शब्दों के साथ बूढ़ी ने दूसरी बहू की लाई गई मिठाइयों का रहस्य अपने पति को बताया।

बाक़ी दोनों बहूएँ मझली के गले में माला देख चकित रह गईं। मिठाइयों की बाबत उसने जो धोखा दिया, उसके साथ गुप्त रूप से सास और ससुर को नये वस्त्र देने की बात भी उन पर प्रकट हो गई। उस दिन से बड़ी और छोटी बहू एक हो गईं और मझली बहू से बात करना तक बंद कर दिया। मझली बहू इसलिए खुश हुई कि उस दिन से उसे बड़ी और छोटी बहू परस्पर एक दूसरे की जो शिकायत करती थीं, उनसे उसे पिंड छूट गया है।

१७१. ध्वस्त मंदिर

ई. पू. तीसरे सहस्त्राब्द में आर्मेनिया के गार्नि के पास कुछ लोग बस गये थे। उन दिनों में वहां पर एक क़िला भी निर्मित हुआ। ई. पू. दूसरी शताब्दी में आर्मेनिया के राजा गार्नि के पास गर्मी के दिन बिताया करते थे। ई. सन् ५९ में रोमनों ने गार्नि पर आक्रमण करके उसे पूर्ण रूप से ध्वस्त किया। फिर उसका पुनर्निर्माण हुआ, पर पुनः ७-वीं शती में फिर से उसे ध्वस्त किया गया। तीन शताब्दियों के बाद पुनः उसका निर्माण हुआ, लेकिन १७-वीं शती में अंतिम बार उसे ध्वस्त किया गया। उस मंदिर के खण्डहरों के पत्थर चारों ओर बिखरे पड़े थे। उनका संग्रह करके आधुनिकों ने उक्त मंदिर का पुनर्निर्माण किया। वह मंदिर इस वक्त येरिवान से २७ किलो मीटरों की दूरी पर है।
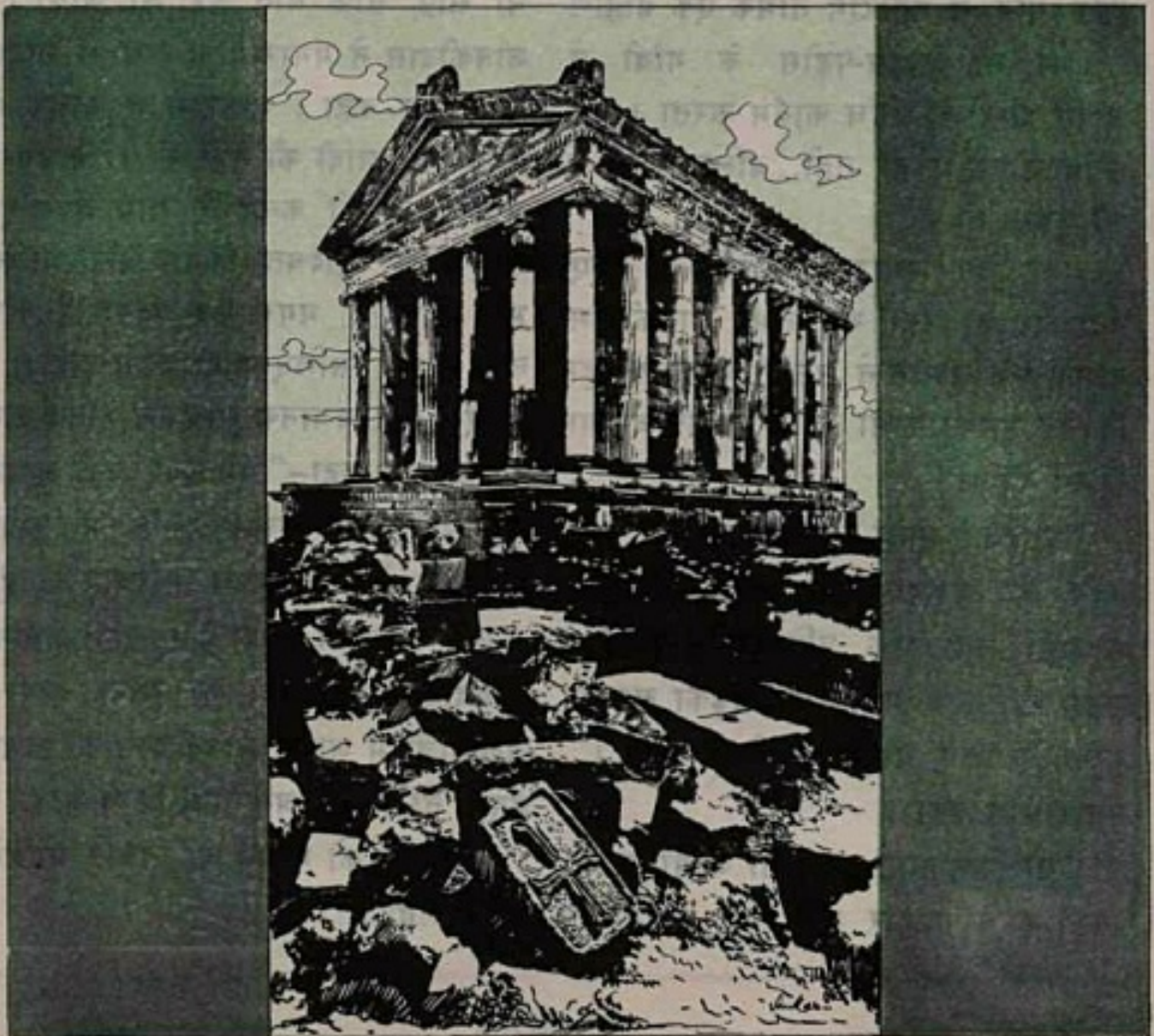
करनी का फल

एक गाँव में मंगाराम नामक एक ब्राह्मण था जो अड़ोस-पड़ोस के गाँवों में जाकर शादी के संबंध क़ायम करता । वह संबंध जोड़ने में ही नहीं, बल्कि तोड़ने में भी कुशल था ।

एक दिन मंगाराम नहाने के लिए नदी पर जा रहा था, तभी जानकीदास नामक एक सज्जन ने उसको बुलाकर कहा कि वह उसकी कन्या के लिए कोई बढ़िया रिश्ता ढूँढ़ ले !

"साहब ! संबंध की खोज में और कहीं जाने की जरूरत नहीं, पीछे की गली में नया नया एक परिवार आया है । उसमें रहनेवाले माधव का लड़का आपकी कन्या के लिए योग्य वर सिद्ध होगा ।" मंगाराम ने कहा ।

"तो फिर क्या, तुम अभी जाओ, शादी पक्की करके उपहार और भेंट की बाबत भी साफ़ साफ़ बात कर आ जाओ ।" जानकीदास ने मंगाराम के हाथ में तांबूल रखते हुए कहा । मंगाराम ने माधव के घर जाकर शादी की बातें कीं । माधव ने जानकीदास की कन्या के साथ अपने पुत्र का संबंध निश्चित किया और तिलक भी कराया । मगर उन दिनों में कोई लग्न न थे, इसलिए शादी हो न पाई ।

एक दिन अचानक माधव ने जानकीदास को बुलाकर कहा-"मंगाराम, बड़ी आफ़त आ पड़ी है । पड़ोसी गाँव में हमारे रिश्तेदार हैं । वे संपन्न परिवार के हैं ! उनकी इकलौती कन्या है । सारी जमीन-जायदाद उसी कन्या को प्राप्त होगी । जल्दबाजी में आकर जानकीदास को वचन हमने तो दिया, अब क्या किया जाय ?"

मंगाराम को माधव का विचार समझते देर न लगी ।

राम मोमानी

"साहब! इस छोटी-सी बात के लिए घबराते क्यों हैं? आप एक काम कीजिए! अभी खबर भिजवा दीजिए कि आप ने जानकीदास की कन्या के साथ अपने पुत्र की शादी रद्द कर ली है।" मंगाराम ने सलाह दी।

"तिलक भी हो गया है न! अब हम कोई सही कारण बताये बिना शादी रद्द कर बैठे तो क्या लोग हमारी निंदा न करेंगे?" माधव ने शंका प्रकट की।

"यह कौन बड़ी बात है? इस संबंध को तोड़ने की जिम्मेदारी मेरी ठहरी? आप अपने रिश्तेदारों का संबंध क़ायम कर लीजिए!" मंगाराम ने कहा। पक्की की गई शादी को तोड़ने के लिए माधव ने मंगाराम को पर्याप्त धन भी दिया।

मंगाराम ने आखिर शादी तोड़कर अपनी बात साबित कर दिखाई। जानकीदास की कन्या के चरित्र में ऐब दिखाकर माधव के पुत्र के साथ उसके विवाह का संबंध तोड़ डाला। इस पर माधव ने मंगाराम को पुरस्कार भी दिया।

इसके थोड़े दिन बाद मंगाराम के पुत्र के विवाह का एक रिश्ता आया। कन्यापक्ष के लोग विवाह का रिश्ता क़ायम करने के लिए मंगाराम के घर आ पहुँचे। उनके साथ एक ज्योतिषी भी था। कन्यापक्ष के लोग संपन्न परिवार के थे, इसलिए मंगाराम ने उनका सत्कार

दिल खोलकर किया और अपने पुत्र की जन्मकुंडली लाकर ज्योतिषी के हाथ रख दी।

ज्योतिषी ने जन्मकुंडली की जांच की। कोई गणना करके बोला–"अजी! यह विवाह उचित प्रतीत नहीं होता! वर अल्प आयु का है। साथ ही वर तथा वधू की जन्मकुंडली मेल नहीं खाती।"

कन्यापक्ष के लोगों का जन्मकुंडली पर अपार विश्वास था, इसलिए वे लोग रिश्ता क़ायम किये बिना वहाँ से उठकर चले गये। उनके पीछे ही खिसकनेवाले ज्योतिषी की बाँह पकड़ कर मंगाराम घर के भीतर उसे खींच ले गया और डांटकर पूछा–"तुम ने मेरे पुत्र की आयु कम बताकर इस बढ़िया संबंध को क्यों तोड़ डाला?"

ज्योतिषी घबराकर बोला–"महाशय! आप के पुत्र ने जो कुछ कहने का आदेश दिया, मैंने वही कहा। मैं तो रुपयों के लोभ में पड़कर जैसे लोग मुझे नचाते हैं, वैसा नाचनेवाला हूँ। कृपया मुझे माफ़ कर दीजिए।"

मंगाराम को लगा कि किसी ने अचानक उसके गाल पर चपत दे मारी है! उसने भी तो आज तक यही काम किया है!

इस बीच मंगाराम का लड़का जानकीदास की कन्या को साथ ले आ धमका! दोनों ने मंगाराम के चरण छूकर प्रणाम किये।

"पिताजी! मैं जानता हूँ कि इस कन्या का जो रिश्ता क़ायम हुआ था, उसे तुमने तोड़ डाला। इसके बाद मुझे यह खबर मिली कि जानकीदास अपनी कन्या के विवाह को लेकर बहुत ही दुखी हैं; मैंने सोचा कि तुमने उस अबोध कन्या के साथ जो अन्याय किया है, उसका प्रायश्चित इस कन्या के साथ मेरा विवाह करना ही है। इसी विचार से मैंने इस युवती के साथ शादी की है। हमें आशीर्वाद दो।" मंगाराम के पुत्र ने कहा।

अपने पुत्र के मुंह से ये बातें सुन मंगाराम चकित हो देखता ही रह गया।
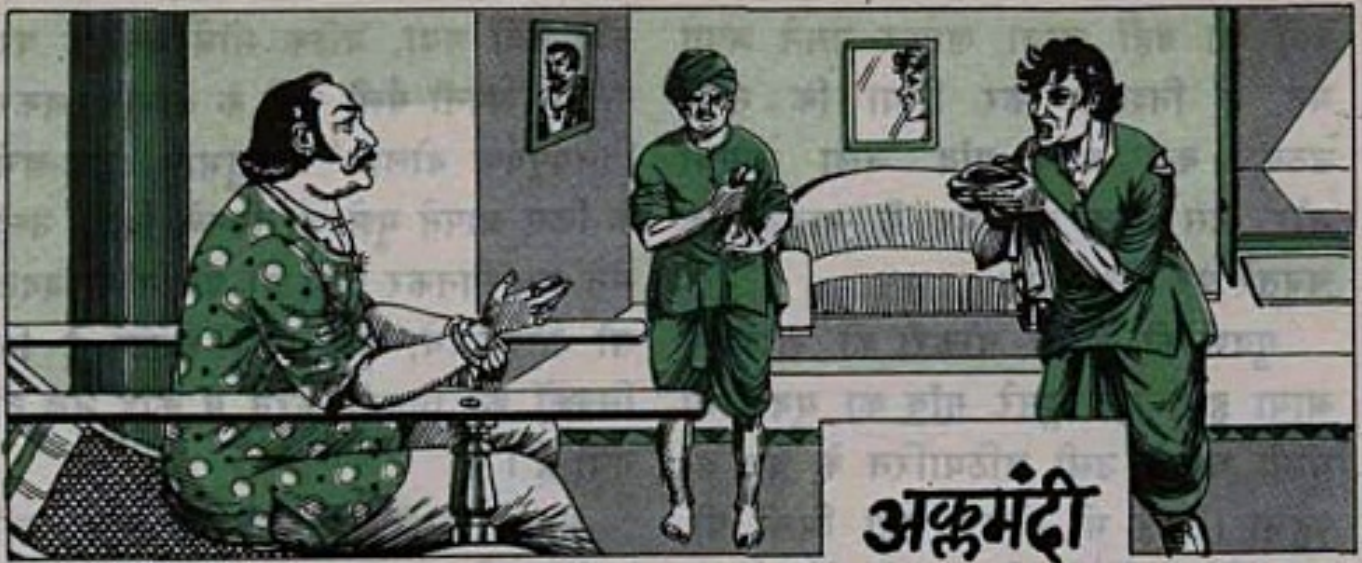
अक़्लमंदी

सुवर्ण नामक एक युवक विजयनगर के समीप के एक गाँव में निवास करता था। वह बड़ा ही अक़्लमंद था।

एक दिन उसने अपने गाँव में एक ढिंढोरा सुना। ढिंढोरा पीटनेवाला चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा था—'विजयनगर के एक धनी व्यक्ति के लिए कई ऐसे नौकर चाहिए जो मवेशियों का पालन करना जानते हों। ऐसे अनुभवी लोग विजयनगर में आकर अमुक दिन उस धनी से मुलाक़ात करे।'

मवेशियों को चराने में सुवर्ण थोड़ा-बहुत अनुभव रखता था। अलावा इसके अनेक दिनों से उसके मन में विजयनगर देखने की बड़ी इच्छा थी। एक साथ दोनों काम सिद्ध होंगे, इस ख्याल से वह राह-खर्च के लिए थोड़ा धन लेकर विचयनगर की ओर चल पड़ा।

विजयनगर पहुँच कर सुवर्ण ने धनी के मवेशियों को देखा तो उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही। उस धनी के यहाँ पाँच सौ गायें और एक हज़ार भैंसें थीं। ढिंढोरा सुनकर कई गाँवों से लगभग एक सौ लोग मवेशियों को चराने के इरादे से आ पहुँचे थे।

धनी ने सभी युवकों के अनुभव का दरियाफ़्त किया और उनमें से सिर्फ़ पचास लोगों को चुनकर अपने यहाँ नौकरी दी और बाक़ी लोगों को वपस भेजते हुए राह-खर्च मद्दे प्रत्येक व्यक्ति को पचास सिक्के एक थैली में डाल कर दे दिया।

सुवर्ण को तो नौकरी नहीं मिली, मगर पचास सिक्के हाथ लगे। वह शाम तक विजयनगर को देखता रहा, अंधेरा फैल जाने पर एक भठियारिन के घर पहुँचा।

मिश्रीलाल

रात को वहीं खाना खाकर उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि सुबह उठकर वह अपने गाँव चला जाएगा और उस रात को घर के बाहर एक चबूतरे पर लेट गया।

सुवर्ण की भांति नौकरी की खोज में आया हुआ एक दूसरे गाँव का युवक भी घूमते घामते उसी भठियारिन के घर आ पहुँचा। उसे भी नौकरी नहीं मिली थी, पर पचास सिक्के मिल गये थे। मगर जब उसने थैली खोलकर सिक्कों की गिनती की तो उसने पाया कि उसकी थैली में पचास के बदले सौ सिक्के थे। किसी ने भूल से उस थैली में दो बार पचास-पचास सिक्के डाल दिया होगा। यह बात वह युवक खुशी में आकर किसी से कह रहा था, ये बातें सुवर्ण के कानों में पड़ गईं।

सवेरा होते ही सौ सिक्के पानेवाला वह युवक अपने गाँव चला गया, मगर सुवर्ण अपने पूर्व निर्णय के अनुसार अपने गाँव नहीं गया, बल्कि सीधे धनी के घर पहुँचा, अपनी थैली धनी के सामने रखकर विनयपूर्वक बोला–"महानुभाव, राह-खर्च के लिए आपने मुझे जो सिक्के दिये, उन्हें मैंने जब गिनकर देखा तो पचास के बदले सौ सिक्के थे, मुझे ऐसा लगता है कि सिक्कों की गिनती करने में कोई भूल हो गयी है।"

सबको राह-खर्च देने के बाद धनी व्यक्ति ने बचे हुए सिक्के गिनकर देखा तो उनमें पचास सिक्के कम पड़ रहे थे। मगर उसने सपने में भी न सोचा था कि वे सिक्के पुनः उसके पास लौट आयेंगे। धनी व्यक्ति सुवर्ण की इस ईमानदारी पर बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसे मवेशियों को चराने से बढ़कर कोई अच्छी नौकरी देकर अपने यहाँ रख लिया।

सुवर्ण की यह अक़्लमंदी उसकी आजीविका के लिए इस प्रकार अत्यंत ही सहायक सिद्ध हुई।

असली चोर

प्राचीन काल में गिरिव्रजपुर पर मणिपाल नामक राजा राज्य करता था। वह बड़ा ही भक्त, उदार और युक्तिवान था। मणिपाल के राजवंश की यह प्रथा थी कि राजा प्रति दिन अपनी कुल देवी प्रभामणि देवी को एक मणि के द्वारा अलंकृत कर उसकी पूजा करे, तब उस मणि को स्वर्ण पेटिका में रखें, एक वर्ष पश्चात देवी का उत्सव मनाकर योग्य तथा गरीब ब्राह्मणों में उन्हें दान दे। राजा का यह विश्वास था कि पीढ़ियों से चली आनेवाली इस प्रथा का उल्लंघन करे तो उसकी हानि होगी। इसलिए राजा इस नियम का सदा पालन करता रहा।

प्रति दिन पूजा की समाप्ति पर राजा मणि उठाकर भद्रशीली नामक अपने कोशाध्यक्ष के हाथ दिया करता था। भद्रशीली सबके सामने उस मणि को पेटी में डालकर ताला लगा देता था। उस पेटी के दो चाभियाँ थीं; एक राजा के पास रहती थी और दूसरी भद्रशीली के पास। भद्रशीली बीस साल से राजा की सेवा करता आ रहा था और विश्वास पात्र के रूप में प्रसिद्ध था। इसलिए राजा का उस पर कोई संदेह न था।

एक दिन दरबार लगा हुआ था, तभी भद्रशीली वहाँ पर पहुँचा और दुखी स्वर में यों बोला—"महाराज! बड़ा ही अनर्थ हो गया है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं यह समाचार आप को कैसे सुनाऊँ? यदि आप मुझे अभय प्रदान करें तो मैं असली बात आप से निवेदन करूँगा। स्वर्ण पेटिका में आज बीस मणि कम हो गये हैं। मैं समझ नहीं पाता हूँ कि यह भयंकर चोरी कैसे हो गई है? उस पेटी की चाभियाँ सिर्फ़ मेरे तथा आप के

विनय देशपांडे

पास ही हैं। उसे प्रति दिन मैं ही खोलता हूँ और बंद करता हूँ! ऐसी हालत में अन्यों पर संदेह किया जाय तो अन्याय ही होगा। चाहे चोरी किसी भी रूप में हो गई हो, पर इसकी जिम्मेदारी मेरी ही है। यह संदेह मुझ पर ही ठहर सकता है। एक बार अगर चोरी हो गई है तो दुबारा भी चोरी हो सकती है। इसलिए कृपया आप यह चाभी ले लीजिए।"

मणियों की चोरी हो जाने पर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। चोर तो या तो भद्रशीली हो सकता है या राजा स्वयं। राजा ने चोरी न की हो, पर यह हो सकता है कि उनकी असावधानी के कारण उनके हाथ की चाभी किसी दूसरे के हाथ पड़ गई हो और उन लोगों ने उस चाभी की मदद से उसकी नकल में दूसरी चाभी तैयार कराई हो।

यह सोचकर राजा ने भद्रशीली के हाथ से चाभी नहीं ली। चाभी न लेने के कारण और भी हैं। यदि भद्रशीली ही चोर हो तो उसके हाथ से चाभी लेने के बाद राजा को उसे चोर साबित करने का मौक़ा बिलकुल न मिल सकेगा। अलावा इसके सबके समक्ष भद्रशीली के हाथों से चाभी लेने का मतलब है, दरबारियों के सामने उसका अपमान करना ही होगा। कुछ लोगों के मन में यह संदेह भी पैदा हो सकता है कि क्या पता, राजा ने ही शायद चोरी की हो।
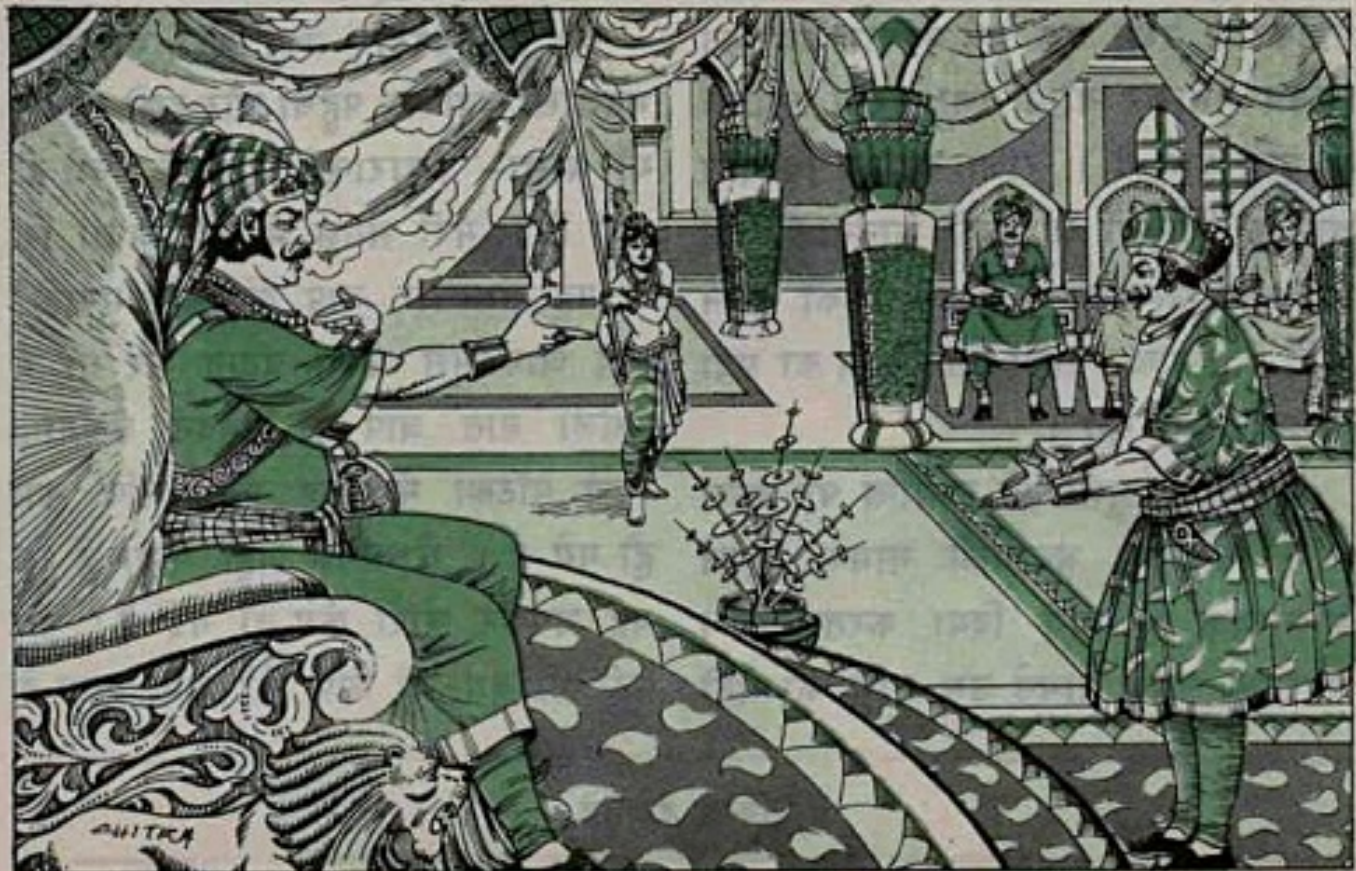
ये सारी बातें सोचकर राजा मणिपाल ने भद्रशीली से कहा–"भद्रशीली! तुम साहस मत खो बैठो! मणियों के चोरी जाने के लिए जैसे तुम जिम्मेदार हो, वैसे मैं भी उतनी ही मात्रा में जिम्मेवार हूँ। इस भरी सभा में मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मान लो, यदि दुबारा भी चोरी हो जाय तो मैं तुम्हारी निंदा नहीं करूँगा। यदि फिर से चोरी हो गई, तब मैं तुम्हारे हाथ से जरूर चाभी ले लूँगा। इस बीच हम दोनों चोर को पकड़ने के प्रयत्न में होंगे। इस प्रयत्न में तुम्हें हर वक़्त पूजा के मंदिर में प्रवेश करने की स्वतंत्रता मैं देता हूँ।"

राजा की इस उदारता की सभी दरबारियों ने प्रशंसा की।

इसके बाद सोने की पेटी में से मणि गायब न हुए। थोड़े दिन बाद देवी का उत्सव आ पड़ा। उत्सव के दिन पूजा के मंदिर में इत्र और गुलाब जल की सुगंध तथा फूल व धूप की खुशबू फैल गई।

देवी की पूजा के समाप्त होने पर मणियों को दान करना था। उस दिन राजा ने सोने की पेटी मंगवाकर उसे खोलने का काम भद्रशीली को न सौंपा, बल्कि पुरोहितों के द्वारा मंगवाकर अपनी चाभी से उसे खोल दिया और मणियों की गिनती की। इसके पूर्व जो बीस मणि चोरी गये थे, उनके अतिरिक्त दस और मणि एक ही रात में चुराये गये थे।

चाभी हाथ में लेकर तैयार खड़ा हुआ भद्रशीली यह बात सुनते ही रो पड़ा।

राजा मणिपाल ने उस से कहा– "भद्रशीली! तुम दुखी क्यों होते हो? मैंने पहले ही तुमसे कहा था कि जब तक चोर पकड़ा न जाएगा, तब तक मैं तुम पर कोई दोषारोपण न करूंगा। दूसरी बार भी चोरी हो गई है, इसलिए मैं तुम्हारे हाथ की चाभी ले लेता हूँ। मुझे वह चाभी दे दो।"

भद्रशीली के हाथ से चाभी लेकर राजा ने अपना मस्तक उठाकर झट से कह दिया–"भद्रशीली! उस चाभी के साथ तीस मणि भी दे दो।"

भद्रशीली सन्न रह गया। दरबारी भी एक दम अचरज में आ गये।

इसके बाद राजा मणिपाल ने मंत्री को बुलाकर आदेश दिया कि सभी दरबारियों के हाथों की गंध देखकर तब राजा तथा भद्रशीली के हाथों की भी गंध देख ले।

मंत्री ने राजा के आदेश का पालन करके बताया–"महाराज! आप के तथा भद्रशीली के हाथों से एक विचित्र सुगंधी आ रही है!"

"हाँ, हाँ! काश्मीर के राजा ने मेरे वास्ते विशेष रूप से जो इत्र भेजा था, उसी की गंध है यह। मैं प्रति दिन मणियों की गिनती कर रहा हूँ। कल तक दुबारा चोरी नहीं हुई है। चोर को अंतिम मौक़ा कल रात को ही प्राप्त हो गया है। इसलिए कल मैंने मणियों पर अपना निजी इत्र पोत दिया। मैंने भद्रशीली को यह वचन दिया था कि एक और बार भी चोरी हो जाय तो भी उसकी निंदा नहीं करूँगा। इस हिम्मत के साथ कल रात को भद्रशीली ने दस और मणियों का अपहरण किया है।" राजा ने कहा।

चोरी के इस प्रकार साबित होने पर भद्रशीली ने चोरी किये हुए मणि लाकर राजा के हाथ सौंप दिये। मणियों का दान यथा प्रकार संपन्न हुआ। इसके बाद राजा ने भद्रशीली को देश निकाले का दण्ड सुनाया।

सच्ची कारीगरी

एक नगर में एक राजा था। उसका विचार था कि अपने राज्य के पेशेवर कारीगरों को प्रोत्साहन दे। वह विभिन्न प्रकार के पेशेवर कारीगरों को पुरस्कार दिया करता था। देश-भर के बढ़ई, लुहार, बुनकर, सुनार, नक्काशी करनेवाले, शिल्पी तथा चित्रकार अपनी श्रेष्ठ वस्तुओं को ले जाकर राजा को दिखाते थे। उनमें से किसी विशिष्ट कारीगरी पर मुग्ध हो राजा उनको पुरस्कार दिया करता था।

एक बुनकर ने एक सुंदर शाल बुन लिया और उसे ले जाकर राजा को दिखाया। राजा ने उसकी बुनाई की तारीफ़ की, उचित मूल्य देकर उसे खरीदा और साथ ही इनाम देकर भेज दिया।

उसी गाँव में करमचंद नामक एक ठठेरा था जो पात्रों में पड़े छेदों को भरने में निपुण था। उसने सोचा–"राजा तो सभी प्रकार के कारीगरों को पुरस्कार देते हैं। अन्य कारीगर तो नई-नई चीजें बनाकर राजा को दिखाते हैं, उनकी कारीगरी को देख राजा पुरस्कार देते हैं। मगर मुझे अपनी निपुणता का परिचय राजा को देने का मौक़ा क्यों नहीं मिलता?"

यों सोचते रहने पर करमचंद के दिमाग में एक बात सूझ गई। राजा के सामने ही बरतन के छेदों को भर कर अपनी निपुणता का परिचय दे पुरस्कार प्राप्त करना है। इसके वास्ते करमचन्द ने गाँव में जाकर अनेक घरों से छेदों से भरे बर्तन, हंडियाँ, लोटे आदि इकट्ठा कर लिया और उन्हें एक गाड़ी पर लाद कर सीधे राजसभा में पहुँचा।

राजा ने क़मरचन्द तथा गाड़ी को देख पूछा:–"तुम कौन हो? चाहते क्या हो?"

विमला सक्सेना

"महाराज! आप सभी प्रकार के पेशेवर कारीगरों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित कर रहे हैं। मेरा पेशा तो बर्तनों में पड़नेवाले छेदों को भरना है। यदि मैंने उन्हें भर दिया तो यह समझना कठिन होगा कि पहले बर्तनों में किस जगह छेद हो गया था। मैं अपनी कारीगरी की निपुणता आपको दिखाने के ख्याल से बड़ी दूर से आया हूँ।" कमरचन्द ने जवाब दिया।

राजा ने कमरचन्द की कारीगरी देखने को मान लिया। कमरचन्द ने राजा के देखते कुछ बर्तनों में छेद कर दिये, फिर उन्हें भर कर पालिश करके राजा को दिखाया। आश्चर्य की बात थी कि छेद का पता लगाना मुश्किल था। राजा ने प्रसन्न होकर उसे पुरस्कार दे भेज दिया। करमचन्द ने अपने गाँव लौट कर सबके बर्तन ज्यों के त्यों लौटा दिये।

गाँववालों ने अपने बर्तनों को पूर्ववत् देख करमचन्द से पूछा-"करमचंद, तुमने हमारे बर्तन ज्यों के त्यों वापस कर दिये। इनकी मरम्मत तो तुमने नहीं की है। ऐसा क्यों?"

"मैंने आप लोगों के बर्तनों की मरम्मत करने के लिए थोड़े ही लिये थे? अपनी कारीगिरी की निपुणता राजा को दिखाने के लिए ले गया था। राजा से पुरस्कार प्राप्त कर लिया। बस, मेरा काम सध गया।" करमचन्द ने जवाब दिया।

गाँववालों ने जाकर राजा से शिकायत की। इस पर राजा ने करमचन्द को बुलवा कर आदेश दिया-"मैंने तुम्हें इसलिए पुरस्कार दिया था कि तुम्हारी कारीगरी से जनता का फ़ायदा हो, लेकिन यह बात जान लो, जो कारीगरी जनता के किसी काम की नहीं है, उसे कोई पुरस्कार नहीं है; उसे वापस कर दो।"

करमचन्द नें अपनी करनी पर पछताते हुए माफ़ी माँग ली और उस दिन से वह जनता का काम बड़ी लगन के साथ करने लगा।

जैसे को तैसा

पुराने जमाने में कोसल देश पर राजा माधवसेन शासन करता था, वह स्वभाव से मूर्ख था। उसका मंत्री सुबुद्धि लोभी था। राजा यदि किसी को किसी भी प्रकार का पुरस्कार देना चाहता तो मंत्री उसमें अडंगे लगाता। यदि उसकी चाल न चलने की वजह से किसी को दान देना पड़ता तो मंत्री दान देने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेता और राजा की तरफ़ से मिलनेवाली रक़म में से कोई एक चौथाई दे देता। राजा को यह बात मालूम हो गई, पर वह कुछ न कर पाया।

एक दिन राज दरबार में एक पंडित ने प्रवेश किया और उसने अपने पांडित्य के द्वारा राजा तथा दरबार के सदस्यों को भी प्रभावित किया। पंडित स्वप्नों का भी वृत्तांत जानता था। यह समाचार सुनते ही राजा ने प्रसन्न होकर मंत्री को आदेश दिया–"मंत्री महोदय, इस पंडित को सौ स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार के रूप में दे दो।"

यह बात सुनने पर मंत्री को बड़ा क्रोध आया, उसने सोचा–'दरबार में प्रवेश करके चार कविताएँ सुनाने का पारिश्रमिक सौ स्वर्णमुद्राएँ कहीं दी जाती हैं?'

इसके बाद राजा से निवेदन किया– "महाराज! पंडितजी ने जो कविताएँ सुनाई हैं, सब पुरानी हैं। सब लगभग मेरे पिता की रची हुई हैं, लेकिन दुख की बात यह है कि वे इस वक़्त जीवित नहीं हैं, यदि पंडितजी कोई नई कविता सुनाकर आपके द्वारा सम्मान प्राप्त करे तो यह उनके लिए तथा आपके लिए भी अधिक गौरव की बात होगी।"

राजा तो कोई स्वतंत्र विचार नहीं रखता था, वह तो अव्वल दर्जे का मूर्ख तो था ही, उसने झट से कहा–"हाँ, हाँ,

लक्ष्मीसागर वर्मा

मंत्री का कहना बिलकुल सत्य है। तुम्हें पुरस्कार नहीं मिलेगा।"

फिर क्या था, पंडित को जो पुरस्कार मिला, वह जाता रहा। उसने सोचा कि अब अपने सपने का पांडित्य भी प्रदर्शित करे तो भी मंत्री विघ्न डालेंगें, यह सोचकर बोला-"जी हाँ, महाराज! तब तो मुझे आज्ञा दीजिए!" यों कहकर पंडित दरबार से चला गया।

इसके बाद पंडित ने मंत्री के व्यवहार के संबंध में कई बातें जान लीं। मंत्री का पिता भी प्रसिद्ध कवि था। उसका देहांत एक वर्ष पूर्व ही हो चुका था। यह बात जानकर पंडित दूसरे दिन पुनः राजदरबार में आया।

राजा ने पंडित को देख पूछा-"पंडितजी आप फिर से क्यों आये?"

"महाराज! आप मुझे क्षमा कर दीजिए। कल मैंने जो कविताएँ सुनाईं, वे मंत्री के पिता की रची हुई हैं। उन्होंने कल रात को मुझे स्वप्न में दर्शन देकर डांट दिया-"अबे, तुम मेरी कविताएँ बेचकर अपना पेट भरना चाहते हो? इसके दण्ड स्वरूप सौ चांदी के सिक्के दे दो।" मैंनें उनसे पूछा-"गुरुदेव, आप मुझे क्षमा कर दीजिए, पर मैं वे सिक्के आप तक कैसे पहुँचा दूं?" इसके उत्तर में उन्होंने बताया था-"मेरे पुत्र जब मुझे तर्पण देंगे, तब उन सिक्कों को भी हाथ में रख लें तो मुझ तक पहुँच जायेंगे। इसलिए मंत्री महोदय से मेरी प्रार्थना है कि वे मुझ पर अनुग्रह करके वे सिक्के उनके पिता तक पहुँचा दे।" पंडित ने जवाब दिया।

पंडित की इन बातों पर राजा का विश्वास जम गया, परंतु सुबुद्धि को पंडित की इस मूर्खता पर हँसी आ गई। उसने पंडित के हाथ से खुशी-खुशी सौ चांदी के सिक्के ले लिये। थोड़े दिन गुजर गये। पुनः एक बार पंडित ने दरबार में प्रवेश किया। राजा ने पंडित को गुप्त रूप से बुलाकर पूछा-"पंडितजी, क्या तुमने और कोई सपना देखा?"

पंडित ने उदासपूर्ण चेहरा लिये मंत्री की ओर देख, राजा से कहा–"जी हाँ, महाराज! फिर सपना आया है। मंत्री के पिता सपने में दिखाई दिये, वे क्रोध से मेरी आँखों में देखते हुए बोले–"अबे, तुमने मेरे दण्ड के सिक्के नहीं चुकाये! क्या तुम्हें शाप दूं?" मैंने उन्हें बताया कि राज दरबार में सबके सामने मैंने मंत्रीजी के हाथ चांदी के सिक्के दे दिये हैं, मगर उनका कहना है कि वे सिक्के उनके हाथ पहुँचे नहीं हैं। इसलिए उनके पुत्र के द्वारा ही उनके पास पहुँचा दूं।"

राजा ने विस्मय में आकर मंत्री की ओर देखा। मंत्री के चेहरे पर काटो तो खून नहीं। इस पर राजा ने मंत्री से पूछा–"सुनते हैं कि तुम्हारे पिता के हाथ चांदी के सिक्के पहुँचे नहीं हैं। क्या तुमने तर्पण के साथ सिक्के नहीं दिये?"

मंत्री ने सकुचाते हुए उत्तर दिया–"महाराज! मैंने तो तर्पण दे दिया है।"

इसके बाद राजा ने पंडित की ओर देखकर पूछा–"मंत्री महोदय स्वर्ग तक कैसे पहुँच सकते हैं?"

"महाराज! मेरे भी मन में यही संदेह पैदा हुआ है। इस संदेह का निवारण स्वयं मंत्री के पिता ने ही कर दिया है। उनका कहना है कि मंत्री को यज्ञ का पशु बनाकर आप स्वयं यज्ञ करेंगे तो नौवें दिन मंत्री स्वर्ग की ओर उड़कर चले जायेंगे।" पंडित ने उत्तर दिया।

मंत्री को लगा कि उसके प्राण ऊपर के ऊपर ही उड़े चले जा रहे हैं। मूर्ख राजा पंडित की बातों में आकर उसे यज्ञ पशु बनाकर यज्ञ करेंगे। नौ दिन तक उसे अन्न और जल तक प्राप्त न होगा। उसे यूप स्तम्भ से बांधकर रखा जाएगा। राजा से यह कह भी दे कि यह सब पंडित का षड्यंत्र है, इस पर राजा विश्वास नहीं करेंगे। अब मंत्री की समझ में आया कि पंडित का प्रभाव कैसे होता है? मगर

वह विवश था, इसलिए सर झुकाये खड़ा रहा।

राजा ने यज्ञ की सारी तैयारियाँ करवाईं। मंत्री को हल्दी से भीगे वस्त्र पहनाकर एक स्तम्भ से बांध दिया गया। पंडित ने पुरोहितों को बुलवाकर मंत्र-पठन कराते यज्ञ प्रारंभ किया।

प्रथम दिन के समाप्त होते-होते मंत्री ढीला पड़ गया। खड़े-खड़े उसके पैर दुखने लगे। हाथों में रस्सियाँ बंधे रहने की वजह से दर्द करने लगे। दूसरे व तीसरे दिन भी बीत गये। मंत्री की समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि वह ज़िंदा है या मरा है! तीसरे दिन की रात को मंत्री ने पंडित को गुप्त रूप से अपने पास बुला भेजा, रोते हुए कहा–"पंडितजी, मैंने तुम्हारे प्रति कौन सा अन्याय किया है? राजा ने तुम्हें जो सौ स्वर्ण मुद्राएँ देने की बात कही, उसके साथ पांच सौ चांदी के सिक्के भी मैं तुम्हें दण्ड स्वरूप सौंप दूंगा। मुझे बचाओ।"

"तुमने ऐसे कई लोगों के साथ अन्याय किया है। इसका फल तुम्हें मिलना ही चाहिए। नौवें दिन ही तुम्हारे सारे पापों का परिहार होगा।" पंडित ने कड़कती आवाज़ में उत्तर दिया।

"पंडितजी! मुझे क्षमा कर दो! मेरी अक़्ल अब ठिकाने लग गई है। आइंदा मैं कभी ऐसे अन्याय और अत्याचार नहीं करूँगा।" मंत्री गिड़गिड़ाने लगा।

इस पर पंडित का दिल पसीज उठा। उसने राजा से मिलकर कहा–"महाराज! मंत्री के पिता ने एक बार और सपने में दर्शन देकर बताया है कि यज्ञ के द्वारा वे संतुष्ट हो गये हैं, दण्ड के सिक्के भी उन्हें प्राप्त हो चुके हैं। इसलिए मंत्री को मुक्त करके यज्ञ बंद करवा दे।"

राजा ने सिर हिलाकर कहा–"अच्छी बात है! ऐसा ही करेंगे।"

इसके बाद मंत्री ने पंडित को जो वचन दिया था, उसे पूरा किया। पंडित भी प्रसन्न होकर दूसरे राज्य में चला गया।

लोभ का फल

कई शताब्दियों के पहले चीन के चुवांग राज्य में एक मशहूर शिल्पी था। वह कुशल कारीगर था, इसलिए उसका यश चारों ओर फैल गया था।

एक बार एक जमीन्दार के मन में नक्काशी सीखने की इच्छा हुई, इसलिए उसने शिल्पी को बुला भेजा। शिल्पी को जमीन्दार के महल में रेशमी वस्त्र, नौकर-चाकर सोने-चांदी के आभूषण वगैरह दिखाई दिये। उसके वैभव को देखने पर शिल्पी के मन में ईर्ष्या हुई। उसने मन में कामना की कि वह अपना पेशा त्याग कर सुख-वैभव की ज़िंदगी बिता दे।

उसकी यह इच्छा जानकर एक देवी ने उसे अपार संपत्ति प्रदान की। शिल्पी की प्रसन्नता की सीमा न रही।

थोड़े महीने बीत गये। एक दिन एक सरकारी अधिकारी भ्रमण करते अपने परिवार के साथ पालकी पर उसके घर से होकर आ निकला। अधिकारी को देख सब लोग झुक-झुक कर प्रणाम करने लगे। लेकिन जब अधिकारी उसके घर के सामने आ पहुँचा, तब शिल्पी ने अपने धन के घमण्ड में आकर अधिकारी को प्रणाम नहीं किया। इस पर अधिकारी ने क्रोध में आकर अपने नौकरों के द्वारा शिल्पी को पिटवा दिया।

शिल्पी ने अपने मन में कहा—"केवल धन के होने से कोई प्रोयोजन नहीं है। अधिकार भी चाहिए।" देवी ने शिल्पी को एक अधिकारी बनाया। शिल्पी के दिमाग में अब अधिकार का अहंकार भी आ गया।

एक दिन शिल्पी अपने अनुचरों के साथ एक पहाड़ी प्रदेश में पहुँचा। वहाँ पर कुछ सुंदर कन्याओं को देख वह छेड़छाड़ करने लगा। जब वे कन्याएँ चिल्ला

यमुना वार्ष्णेय

उठीं, तब कुछ पहाड़ी व्यक्ति लाठी, तलवार, कुल्हाड़ी और भालें ले आये और शिल्पी तथा उसके अनुचरों को खूब पीटा।

इस पर शिल्पी ने अपने मन में सोचा– "छी: छी:! इन पहाड़ी व्यक्तियों के सामने कोई भी अधिकारी ठहर नहीं सकता। मैं भी इन पहाड़ी आदमियों में से एक व्यक्ति बनकर रहूँगा।" इस पर देवी ने शिल्पी को एक पहाड़ी व्यक्ति बनाया। वह भी पहाड़ी व्यक्तियों के साथ खेती करते अपने दिन काटने लगा।

एक दिन वह कड़ी दुपहरी में खेत का काम कर रहा था तो धूप के मारे उसका सिर चकरा गया। वह सूरज के तेज पर चकित था, तभी कहीं से एक मेघ ने आकर सूरज को ढक दिया। झट शिल्पी ने सोचा–"ताक़त हो तो उस मेघ की ही है। उसकी आड़ में सूरज का ताप भी हार मानता है। इसलिए मैं भी एक मेघ बन जाऊं!" देवी ने उसे बना दिया। इसी वक़्त हवा का झोंका आकर मेघ को उड़ा ले गया।

"मेघ की अपेक्षा हवा बनकर रहना कहीं उत्तम है!" शिल्पी ने मन में सोचा। तुरंत वह हवा के रूप में बदल कर अपनी शक्ति का परिचय देते हुए झंझा बनकर आसपान में विचरने लगा।

"ओह! हवा तो पहाड़ के सामने तुच्छ है। मैं एक पहाड़ बन जाऊंगा।" शिल्पी ने सोचा। देवी ने उसे एक पहाड़ी शिला बना दिया।

थोड़े दिन और बीत गये। एक दिन कुछ शिल्पी वहाँ पहुँचे, शिला रूप में स्थित शिल्पी को देख बोले–"यह शिला उत्तम किस्म की है। इसे तोड़ ले जाकर सुंदर शिल्प बनायेंगे।"

शिल्पी ने घबरा कर कहा–"हे देवी, मेरी रक्षा करो।"

"तुम्हारा शिल्पी के रूप में ही रहना कहीं उत्तम है।" यों कहकर देवी उसे पूर्व रूप देकर अदृश्य हो गई। इसके बाद शिल्पी के रूप में अपने दिन काटते यश के साथ उसने धन भी प्राप्त किया।

सीताजी का पता लगते ही रामचन्द्रजी को पल भर भी किष्किधा में बिताना अच्छा न लगा और वे सीताजी से मिलने को आतुर हो उठे। यह बात वे बिलकुल सहन नहीं कर पाये कि सीताजी भयंकर राक्षसियों के बीच हैं। हनुमान के मुँह से सीताजी के समाचार सुनते उन्हें बड़ा आनंद आया। इसलिए रामचन्द्रजी ने पूछा–"हनुमान, शीघ्र बताओ, सीताजी ने और क्या क्या बताया है?" हनुमान ने रामचन्द्रजी को कौए की कहानी आद्योपांत सुनाई।

आगे उसने बताया–"सीताजी ने मुझे कौए का वृत्तंत सुनाकर यह भी बताया कि ऐसे शक्तिशाली रामचन्द्रजी स्वयं आकर इन राक्षसों पर अपने अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग क्यों नहीं करते? उनसे कह दो कि श्रीरामचन्द्रजी का यदि मुझ पर थोड़ा सा भी अनुराग है तो वे शीघ्र आकर रावण का वध करें। कम से कम मेरी रक्षा करने के लिए वे लक्ष्मण को भी भेज सकते थे न? देवताओं को भी पराजित कर सकनेवाले वे दोनों भाई मेरी यों उपेक्षा करके चुप क्यों बैठे हुए हैं? शायद मैंने पूर्व जन्म में कोई पाप किया होगा! इसलिए श्रीरामचन्द्र तथा लक्ष्मण बिलकुल मेरी सुध नहीं ले रहे हैं! इस पर मैंने उन्हें समझाया कि आप को न पाकर वे दोनों बड़े ही दुखी हैं। शीघ्र ही उनके कष्टों का अंत हो जाएगा। अतः उन्हें

२८. वानर सेना का प्रस्थान

दुखी होने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस पर वे घबरा गईं, चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर उन्होंने अपनी वेणी में से चूड़ामणि निकाल कर मेरे हाथ दिया। आप सब के कुशल-समाचार भी सीताजी ने पूछा। मैंने उन्हें हिम्मत बंधाई कि श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण तथा सुग्रीव की सेना आकर रावण का वध करेंगी।" हनुमान ने यों विस्तार पूर्वक समझाया।

हनुमान की बातों पर परमानंदित होकर श्रीरामचन्द्रजी बोले-"हनुमान ने बहुत बड़ा कार्य किया है। ऐसा कार्य दूसरों के लिए संभव नहीं है। समुद्र को पार कर सकनेवाले हनुमान के पश्चात शायद गरुड़ तथा वायुदेव ही हैं। लंका में प्रवेश करके प्राणों के साथ लौट आना क्या साधारण कार्य है? उसमें केवल प्रवेश कर पाना ही दूसरों के लिए संभव नहीं है! हनुमान ने न केवल सुग्रीव के आदेशों का पालन किया बल्कि स्वतंत्रता लेकर अशोक वन ध्वस्त किया, राक्षसों का वध किया, लंका को जलाया, इस प्रकार अनेक साहसपूर्ण कार्य भी किये हैं। ये कार्य करके उसने सुग्रीव को अधिक संतोष प्रदान किया है। इसके कार्यों के द्वारा हमारे रघुवंश का बड़ा ही उपकार हो गया है। लेकिन मुझे इस बात का दुख है कि इस वक़्त मैं हनुमान का समुचित सत्कार करने की स्थिति में नहीं हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि मेरे तथा सीताजी के प्राण बचानेवाले हनुमान के उपकार का बदला कैसे चुकाया जाय? मैं अब केवल यही कर सकता कि एक बार हृदयपूर्वक उसके साथ आलिंगन कर लूंगा।" इन शब्दों के साथ श्रीरामचन्द्र ने हनुमान के साथ गाढ़ालिंगन किया।

इसके उपरांत थोड़ी देर तक सोचकर रामचन्द्र ने कहा-"वानर सेनाएँ समुद्र को पार कर उस पार कैसे पहुँच सकेंगी? इस बात की कल्पना मात्र से मुझे डर लगता है। सीताजी को ढाढ़स बंधाना

तो बड़ा ही सरल कार्य है, पर उस अपार समुद्र को पार करने का उपाय क्या है?" यों कहते रामचन्द्रजी चिंता में डूब गये।

इस पर सुग्रीव ने यों समझाया :

"श्रीरामचन्द्रजी! आप क्यों दुखी होते हैं? सीताजी तथा शत्रु के स्थानों का जब हमें पता लग गया है, ऐसी हालत में अन्य समस्याएँ शत्रु का वध करने में हमें रोक नहीं सकती। हम रावण का वध करके सीताजी को ले आयेंगे! समुद्र पर सेतु बाँधकर हम लंका नगर को देख लेंगे, तब रावण मृत व्यक्ति के समान है। इस वक़्त आप को चिंता नहीं, क्रोध करना है। आप भी सोच लीजिए कि समुद्र को कैसे पार किया जाय? हम सेतु बाँध कर, नहीं तो किसी अन्य उपाय के द्वारा समुद्र को पार कर लेंगे। रावण मरकर ही रहेगा और आप को विजय अवश्य प्राप्त होगी। आप विश्वास रखिये।"

रामचन्द्रजी ने हनुमान की ओर मुड़कर कहा–"मान लो कि हम समुद्र पर सेतु बाँधकर या समुद्र को सुखाकर अथवा तपस्या के द्वारा भी समुद्र को पार कर सकते हैं, लेकिन यह बताओ, लंकानगर में कितने दुर्ग हैं? रावण की सेना कितनी है? द्वारों की रक्षा कैसे की जाती है? परकोटे आदि का निर्माण कैसे हुआ है? तुमने तो प्रत्यक्ष देख लिया है, इसलिए मुझे लंका नगर की सुरक्षा की रीति सविस्तार बतला दो।"

हनुमान ने रामचन्द्रजी को यों बताया : "लंका नगर अत्यंत विशाल है। वहाँ पर असंख्य राक्षस सुख पूर्वक निवास कर रहे हैं। जहाँ भी देखो, रथ, हाथी और घोड़े दिखाई देते हैं। लंका नगर में दुश्मन का प्रवेश करना असंभव है। नगर के चार प्रधान द्वार हैं। उनके मजबूत तथा ऊँचे किवाड़ हैं। द्वारों के निकट बाण तथा शिलाओं का प्रयोग करनेवाले बड़े-बड़े यंत्र हैं। शत्रु की सेना यदि उधर आ जाएगी

जिन दिनों में युद्ध नहीं होता, उन दिनों में भी अपनी सेनाओं को प्रशिक्षण में रखते हैं। अलावा इसके लंका नगर त्रिकूट पर्वत पर निर्मित है। नीचे से ऊपर तक जाने का कोई मार्ग नहीं है। लंका तक पहुँचने के लिए नौका मार्ग भी नहीं है। इसलिए वहाँ के समाचार बाहरी दुनिया को बिलकुल प्राप्त नहीं होते। लंकानगर के द्वारों के पास लाखों की संख्या में सशस्त्र राक्षस सन्नद्ध रहते हैं। नगर के बीच असंख्य राक्षस सेना है। मगर मैंने कंदकों पर के पुलों को तोड़ डाला, लंका नगर को जला दिया; कतिपय राक्षस वीरों को मार डाला। इसलिए इस वक़्त लंका नगर की शक्ति घट गई है। समुद्र को किसी भी उपाय से पार किया जा सकता है। लंका पर विजय प्राप्त करने के लिए हमारे अंगद, द्विविद, मैंद, जांबवान, बनस, हमारे सेनापति नील पर्याप्त हैं। अन्य सैनिकों की भी आवश्यकता नहीं है। शीघ्र ही बढ़िया मुहूर्त निश्चित करके लंका पर हम हमला कर सकते हैं।"

इस पर रामचन्द्रजी ने सुग्रीव से कहा—"हम लोग अभी रवाना हो जायेंगे। सूर्य ठीक मध्य आकाश में है। अभिजित नामक यह मुहूर्त युद्ध के लिए अत्यंत उत्तम है। अब हमें विलंब नहीं करना चाहिए।"

तो वे यंत्र आसानी से उनका नाश कर सकते हैं। द्वारों के पास महान शूर-वीर राक्षस पहरे पर तैनात हैं। उनके पास जो लोहे के गदे हैं, एक ही प्रहार से सौ लोगों का वध कर सकते हैं। नगर के चतुर्दिक सोने की चहार दीवारी है। उस पर जहाँ-तहाँ रत्न जड़े हुए हैं। उस चहार दीवारी के चारों तरफ़ गहरे कंदक हैं। उनमें भयंकर मगर-मच्छ तथा मछलियाँ हैं। प्रत्येक द्वार के पास कंदक को पार करने के लिए बड़े-बड़े पुल बने हुए हैं। जरूरत पड़ने पर उन पुलों को उठाने तथा गिराने के लिए आवश्यक बड़े-बड़े यंत्र हैं। रावण अत्यंत जागरूक है।

सेनाओं के संचालन का भी उन्होंने इस प्रकार निर्देश किया : सेनापति नील को चाहिए कि फलों से भरे मार्गों से होते हुए अपनी सेना का संचालन करे। इस बात की भी सावधानी बरतनी चाहिए कि शत्रु पहले ही उन प्रदेशों को ध्वस्त न करे और वे मार्ग में कहीं छिपे रहकर अचानक हम पर हमला न कर बैठे। हमारी सेनाएँ जिस मार्ग से होकर आगे बढ़ेंगी, उस मार्ग में पहले ही आकाश-पथ पर जाकर किसी के द्वारा शत्रु सेना की गति-विधियों का पता लगाना होगा। इस कार्य में गुप्तचरों की सहायता ले सकते हैं। कम साहसी वीरों को यहीं पर छोड़ अच्छे अच्छे व चुने हुए योद्धाओं को ही हमें अपने साथ ले जाना होगा।

इसके बाद रामचन्द्रजी के साथ वानर सेंनाएँ रवाना हुईं। विशाल काय गज, महाबली गव और गवाक्ष सेना के अग्र भाग में रहकर आगे बढ़े। उड़ान भरने में कुशल ऋषभ ने सेना के दायें पार्श्व की रक्षा की। सेना के मध्य भाग में श्रीरामचन्द्र हनुमान के कंधों पर सवार हो आगे बढ़े। इसी प्रकार लक्ष्मण अंगद के कंधों पर सवार हुए। सेना दक्षिणी दिशा में आगे बढ़ी। वानर उछलते-कूदते, सिंहनाद करते मार्ग मध्य में फल तोड़कर खाते चल पड़े।

महासमुद्र की भाँति दीखनेवाली वानर सेना पहाड़ तथा सरोवरों को पार करते, जंगलों में फल खाते, शहद पीते, कालक्रम में महेन्द्र पर्वत पर पहुँची।

रामचन्द्रजी ने पर्वत-शिखर पर चढ़कर समुद्र को देखा। तदुपरांत सुग्रीव तथा लक्ष्मण के साथ वे नीचे उतर आये। तब समुद्र तट पर पहुँची वानर सेना के पास आये। फिर सुग्रीव से बोले–"हम लोग यहाँ पर अपना पड़ाव डालकर समुद्र को पार करने का उपाय सोचेंगे। सेना को छोड़कर किसी को भी बाहर मत जाने दो, शत्रु-भय से सेना की रक्षा का उचित प्रबंध करो।"

इसके बाद वानर सेना ने तीन भागों में बंटकर समुद्र के तट पर अपने पड़ाव डाले।

समुद्र का उस पार दिखाई न दे रहा था। उसकी उत्ताल तरंगों तथा उसके भयंकर प्राणियों की भी कल्पना करके वानर वीर चिंता में पड़ गये कि इस समुद्र को कैसे पार करे!

उधर लंका में हनुमान के कारण रावण का बड़ा अपमान हुआ था। शत्रु जिस लंका में प्रवेश नहीं कर पाते थे, उसमें एक वानर ने आसानी से प्रवेश किया, सीताजी को देखा, चैत्य व महलों को गिराया, अनेक राक्षस योद्धाओं को मारकर लंका को जला डाला।

रावण ने अपनी सभा में उपयुक्त बातें बताकर सभासदों से पूछा–"अब हमारा कर्तव्य क्या है? हमारे उद्धार का उपाय क्या है?"

लंका में समाचार आया कि रामचन्द्रजी भारी वानर सेना के साथ लंका पर आक्रमण करने जा रहे हैं। रावण ने इस बात पर भी विश्वास किया कि रामचन्द्र की सेनाएँ समुद्र को पार करेंगी। इसलिए वह यह जानना चाहता था कि अपनी सेना तथा वानर सेना के बीच युद्ध हुआ तो अपने नगर तथा सेना को खतरे से बचाने का उपाय क्या है?

कुछ राक्षसों ने कहा–" राजन, हमारे पास अपार सेना है। शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्र हैं! ऐसी हालत में आप चिंता ही क्यों करते हैं? इसके बाद रावण की पूर्व विजयों का वर्णन किया। शिवजी के साथ मैत्री रखनेवाले कुबेर को ही रावण ने जीत लिया है। पाताल में स्थित महा सर्प उसके हाथों में पराजित हुए। ऐसा कोई राजा नहीं है जो उसके हाथों में पराजित न हुआ हो। ऐसी स्थिति में रामचन्द्र किस खेत की मूली है! मेघनाथ अकेले ही वानरों का सर्वनाश कर सकता है। इसलिए आप चिंता न करें।"
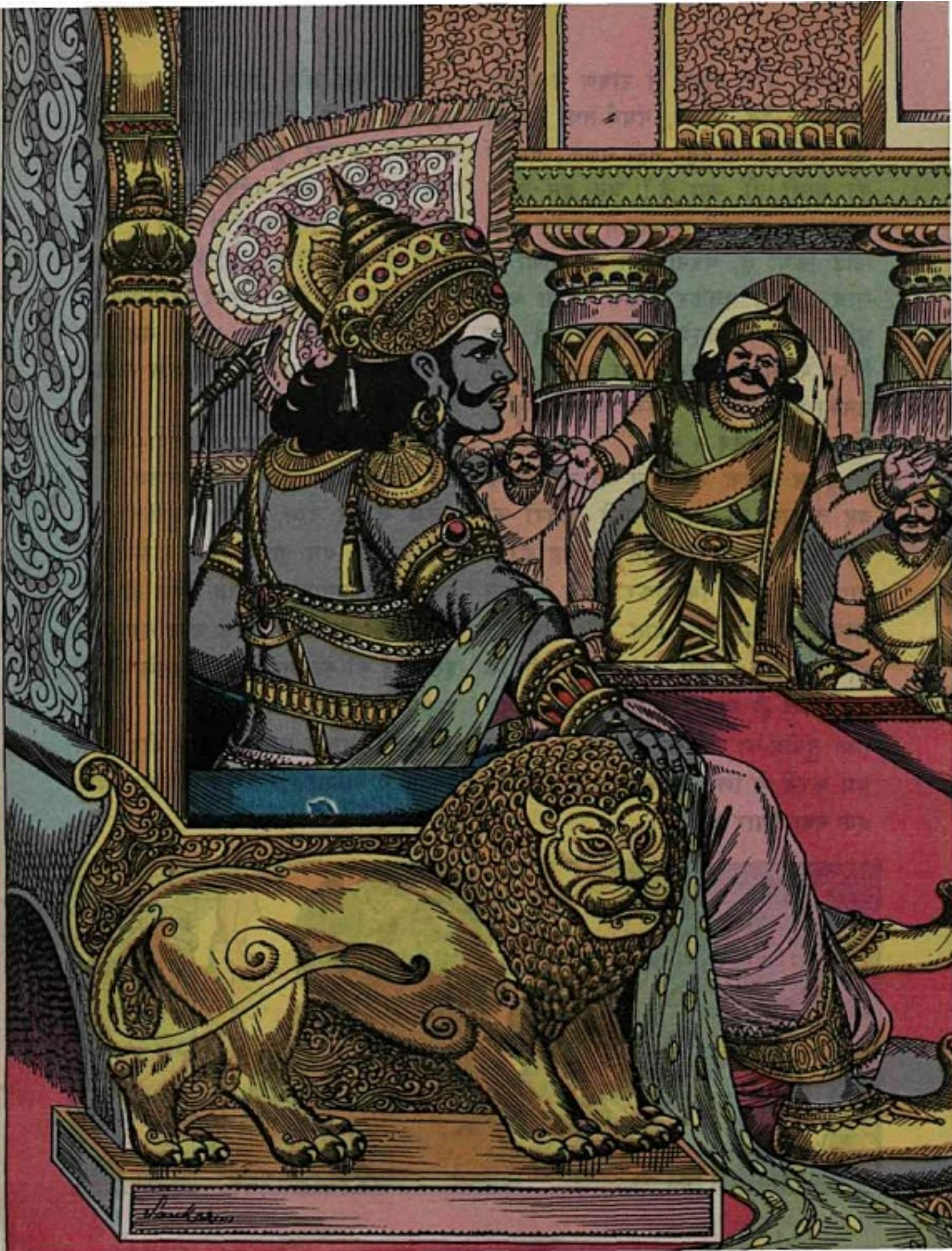
इसके बाद प्रहस्त ने रावण से कहा–"राजन, देव, दानव, गंधर्व तथा पिशाच भी आपके समक्ष ठहर नहीं सकते! वानरों की हस्ती ही क्या है? जब हम लोग असावधान थे तभी हनुमान ने आकर तोड़-फोड़ किया है, वरना क्या वह प्राणों के साथ यहाँ से बचकर निकल सकता था? यदि आप का आदेश हुआ तो मैं इस विश्व के समस्त वानरों का संहार करके उनका ऐसा सर्वनाश करूँगा कि इस सृष्टि में एक भी वानर न बचे!"

दुर्मुख नामक राक्षस ने भी बताया कि वह तत्काल ही जाकर सभी वानरों को मार डालेगा और हनुमान की यह करनी राक्षसों के लिए, विशेषकर रावण के लिए अत्यंत अपमान की बात है। वज्रदंष्ट्र नामक राक्षस ने यहाँ तक डींग मारी कि वह अकेले ही वानरों के साथ राम, लक्ष्मण तथा सुग्रीव का अंत कर डालेगा। उनका वध करने के लिए उसके हाथ में लोहे का एक गदा तैयार था।

उसने एक और उपाय भी बताया। वह यह था कि कामरूपी राक्षस मानवों का रूप धरकर हज़ारों की संख्या में रामचन्द्रजी के पास पहुंच जाय और यह कहा जाय कि उन्हें भरत ने भेजा है, पीछे भरत की सेना भी आ रही है। तब लंका से राक्षसों की सेना जाकर आसमान से पत्थरों की वर्षा करके वानर सेना का निर्मूल किया जाय! तब राम और लक्ष्मण कलेजे फटकर मर जायेंगे।

कुंभकर्ण के पुत्र निकुंभ ने कहा–"आप सब लोग मौन होकर बैठ जाइए। मैं अकेले जाकर राम, लक्ष्मण, सुग्रीव तथा हनुमान का वध करके लौट आऊँगा।" वज्रहनु ने बताया कि वह अकेले ही सारे वानरों को खाकर सकुशल लौट आएगा। इस बात की कल्पना मात्र से उसके मुँह में पानी भर आया।

कुल मिलाकर समस्त राक्षस वीर अनेक प्रकार के आयुध लेकर युद्ध के लिए तैयार हो गये।

यो हि भृत्यो नियुक्तस्सन्
भर्त्ता कर्मणि दुष्करे,
कुर्या त्तदानुरागेण
त माहुः पुरुषोत्तम् ॥ १ ॥

[अपने मालिक के बताये कठिन कार्य को संपन्न करने के साथ उससे संबंधित अन्य कार्यों को भी सफलतापूर्वक करनेवाला व्यक्ति ही सच्चा सेवक है ।]

नियुक्तो यः परम् कार्यम्
न कुर्यान्नृपतेः प्रियम्,
भृत्यो युक्त स्समर्थश्च
त माहु र्मध्यमम् नरम् ॥ २ ॥

[उत्साह तथा योग्यता के रखते हुए भी केवल मालिक का बताया हुआ कार्य मात्र करके अन्य कार्य न करनेवाला मध्यम सेवक है ।]

नियुक्तो नृपतेः कार्यम्
न कुर्या द्य स्समाहितः
भृत्यो युक्त स्समर्थश्च
त माहुः पुरुषाधमम् ॥ ३ ॥

[उत्साह तथा योग्यता के रखते हुए भी जो मालिक का बताया हुआ कार्य नहीं करता, वह अधम सेवक है ।]

Photo by M. Krishna Kumar

पुरस्कृत परिचयोक्ति

नन्हीं-मुन्नी बातें होती हैं अनजाने !

प्रेषिका : उज्वला कुलकर्णि

Photo by M. Krishna Kumar

३६-सी, ओल्डवेल्लिग्टन,
नई दिल्ली-११० ००३
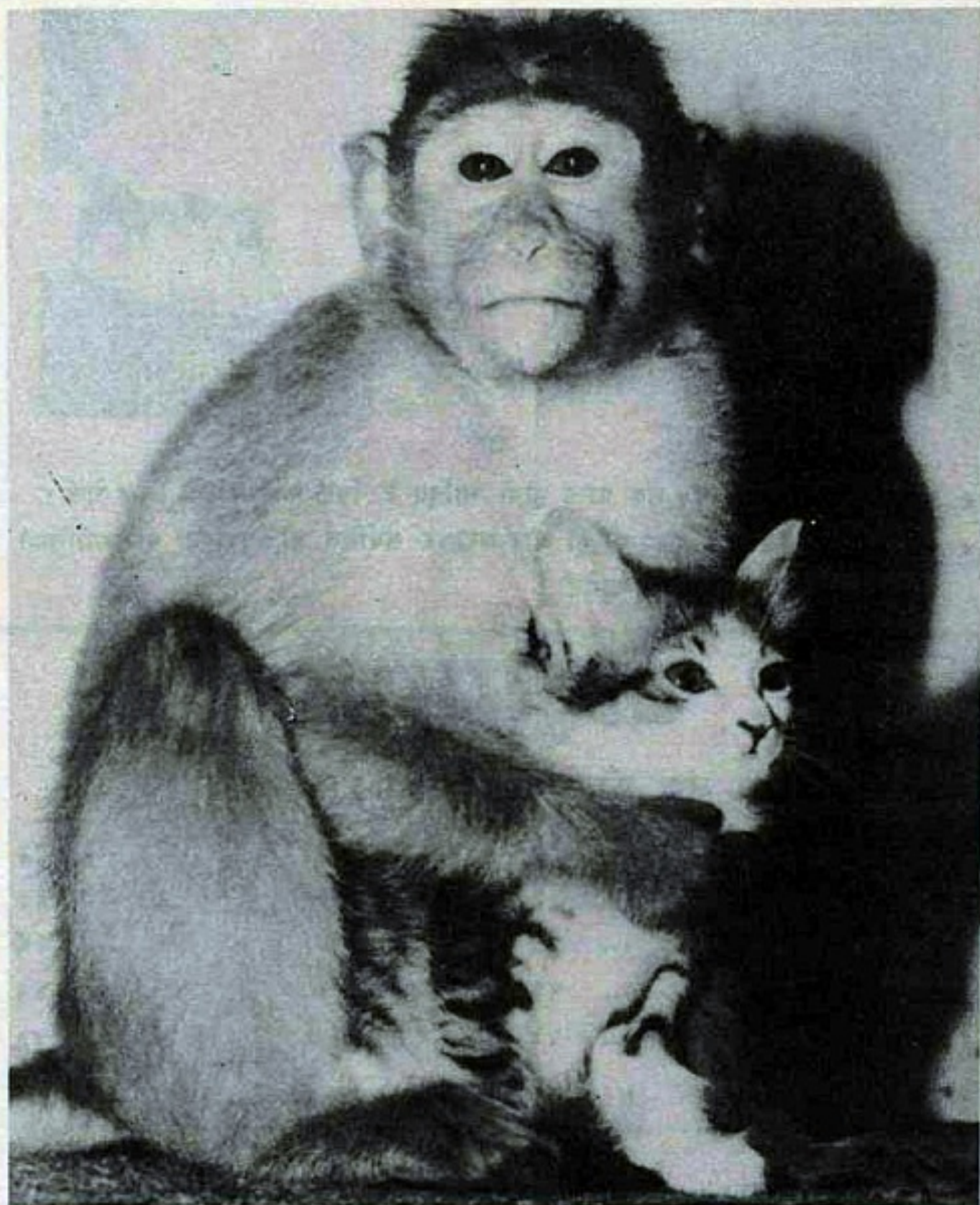
बिल्ली की बातें बन्दर क्या जाने ?

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★
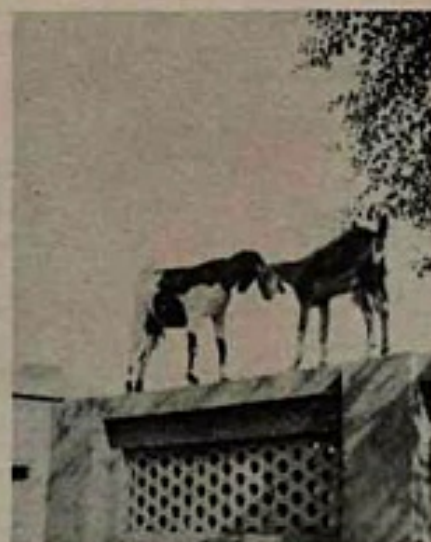
★ परिचयोक्तियाँ अप्रैल १० तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जून के अंक में प्रकाशित की जायेंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road. Madras 600 026 ; Controlling Editor : NAGI REDDI

मच्छरों ने जीना हराम कर दिया

आपको चाहिए
ओडोमॉस

जिसे लाखों लोग विश्वासपूर्वक इस्तेमाल करते हैं • नन्हें-मुन्नों के लिए भी बिलकुल सुरक्षित.

CHAITRA BLS 45 HIN

Photo by: J. S. PAREEK

READY FOR THE DANCE

मित्र-संप्राप्ति